ਤਿੰਨ ਭਾਸ਼ਾਈ

ਬਾਨੀ ਸ੍ਰੀਮਾਨ 108 ਸੰਤ ਗਰੀਬ ਦਾਸ ਜੀ
ਸਰਪ੍ਰਸਤ-ਸ੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਜੀ

NO/83/2000-2
PUN PUN 2001/3865
PB-0004/09 (31-12-2011)

ਸਪਤਾਹਿਕ

ਬੇਗਮਪੁਰਾ ਸ਼ਹਿਰ

मूल्य : 4 रुपए

ਸੁੰਦਰ ਨਗਰ, ਬੈਕ ਸਾਈਡ ਇੰਡਸਟ੍ਰੀਅਲ ਅਸਟੇਟ
ਜਲੰਧਰ-144 012 (ਪੰਜਾਬ)

Weekly PUNJABI-HINDI-ENGLISH (Trilingual weekly)

Begumpura Shaher

SUNDER NAGAR, BACK SIDE INDUSTRIAL ESTATE
JALANDHAR-144 012. PH: 0181-2611697

त्रिभाषीय साप्ताहिक

बेगमपुरा शहर

सुन्दर नगर, बैकसाईड इंडस्टरीयल एस्टेट
जालन्धर-144 012.

ਬਾਨੀ ਸੰਪਾਦਕ (ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ) ਸੰਤ ਰਾਮਾ ਨੰਦ ਜੀ ਮੁੱਖ ਸੰਪਾਦਕ ਸੰਤ ਸੁਰਿੰਦਰ ਦਾਸ ਬਾਵਾ ਸਾਲ : 11 ਅੰਕ ਨੰ. 23 ਦਿਨ ਸੋਮਵਾਰ 26 ਸਤੰਬਰ, 2011 ਮੁਤਾਬਕ 10 ਅੱਸੂ
Founder Editor : (Brahamleen) Sant Rama Nand Ji, Chief Editor : Sant Surinder Dass Bawa, Year : 11, Issue : 23, Day Monday, 26 September 2011 Bikrami Samvat 10 Asuj

ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ ਸ੍ਰੀ 108 ਸਤਿਗੁਰੂ ਬਾਬਾ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਜੀ ਦੇ ਪਾਵਨ ਬਰਸੀ ਸਮਾਗਮ 'ਤੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ :

ब्रह्मलीन श्री 108 सद्गुरु बाबा पिप्पल दास जी के बरसी समागम पर विशेष :

Speical issue on *Barsi Smagam* of Sant Baba Pipal Dass Ji

ਜਗਤਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ

ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਜੀ

ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ ਸਤਿਗੁਰੂ ਹਰੀ ਦਾਸ ਜੀ

ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ ਸਤਿਗੁਰੂ ਗਰੀਬ ਦਾਸ ਜੀ

ਗੱਦੀ ਨਸ਼ੀਨ ਸ੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਜੀ

ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਧਰਮ ਦੇ ਮਹਾਨ ਸ਼ਹੀਦ
ਸੰਤ ਰਾਮਾ ਨੰਦ ਜੀ

ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ ਸ੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਬਾਬਾ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ

ਆਪ ਜੀ ਦੇ ਬਰਸੀ ਸਮਾਗਮ 'ਤੇ

ਤੁਹਾਡੇ ਚਰਨਾਂ ਵਿਚ ਕੋਟਨ-ਕੋਟਿ

ਨਿਮਸਕਾਰ ਕਰਦੇ ਹਾਂ।

ਵਲੋਂ : **ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ**
ਮੌਜੂਦਾ ਗੱਦੀਨਸ਼ੀਨ
ਡੇਰਾ ਸੱਚਖੰਡ ਬੱਲਾਂ
ਜਲੰਧਰ (ਪੰਜਾਬ)।

ਸੰਤ ਸੁਰਿੰਦਰ ਦਾਸ ਬਾਵਾ
(ਮੁੱਖ ਸੰਪਾਦਕ)
ਅਦਾਰਾ ਬੇਗਮਪੁਰਾ ਸ਼ਹਿਰ ਅਤੇ ਸਮੂਹ ਸਟਾਫ਼।

ਸੰਤ ਸੁਰਿੰਦਰ ਦਾਸ ਬਾਵਾ ਜੀ

ब्रह्मज्ञानी श्री 108 संत पिप्पल दास जी महाराज

-संत सुरिंदर दास बावा, डेरा सच्च खण्ड बल्लां

रविदासु भणै जो जाणै सो जाणु
संत अनंतहि अंतरु नांही।

जैसे कि साहिब जगतगुरु रविदास महाराज जी फरमाते हैं कि इस संसार में संत महापुरुषों और परमात्मा में कोई भेद नहीं है। यहां संत महापुरुष इस संसार में भूले-भटके जीवों को परमात्मा के नाम से जोड़ते हैं, वहीं उनका सांसारिक जीवन भी सुधारते हैं। उन में से एक थे महान् समाज सुधारक ब्रह्मज्ञानी 'बेगमपुरा' के प्रवर्तक श्री 108 संत बाबा पिप्पल दास जी महाराज।

जैसे पिप्पल का पेढ़ 24 घण्टे आक्सीजन देता है, जीवों को जीवन प्रदान करता है और वातावरण शुद्ध रखता है इसी प्रकार बाबा पिप्पल दास जी ने पिंड बल्लां में नाम का पिपल लगाया जो पूरे विश्व को प्रभु के नाम की मीठी सुगन्धी दे रहा है। बाबा पिप्पल दास जी का जन्म गाँव गिल्ल पट्टी ज़िला बठिंडा में हुआ। आप जी के दादा जी गाँव कुतीवाला को छोड़कर कुछ वर्ष गाँव जोगानंद रह कर पूर्ण रुप से गाँव गिल्ल पट्टी जिला बठिंडा में ही रहने लगे थे। आप जी का पहला नाम हरनास दास था। आप जी के माता-पिता धार्मिक विचारों वाले थे। आप हमेशा एकांत में बैठ कर प्रभु सिमरन किया करते थे। आप जी से सभी नगरवासी बहुत प्यार करते थे। आप अपने माता-पिता जी की आज्ञा के अनुसार कृषि का कार्य किया करते थे। आप ने गुरमुखी की शिक्षा प्राप्त की। आप हमेशा वैरागमयी ग्रंथ पढ़ा करते थे। आप को वृक्ष लगाने का बहुत शौक था। आप जी द्वारा लगाया गया बेरी का पेड़ आज भी गाँव गिल्ल पट्टी में मौजूद है। आप का विवाह माता शोभावंती जी से हुआ, जो कि धार्मिक विचारों वाली स्त्री थी। आप जी ने श्री 108 संत मोहन दास जी से नाम-दान की बख्शिश प्राप्त की। आप जी के गृह में दो पुत्रों ने जन्म लिया।

आप के बड़े सुपुत्र का नाम श्री सेवा दास जी और छोटे का नाम श्री सरवण दास जी था। जिस वक्त संत सरवण दास जी की आयु केवल पाँच वर्ष की थी, उस समय शोभावंती जी परमात्मा के चरणों मे विलीन हो गए। संत पिप्पल दास जी ने कृषि का कार्य अपने बड़े सुपुत्र सेवा दास जी को सौंप दिया और छोटे सुपुत्र सरवण दास जी को साथ लेकर आप बहुत से स्थानों की यात्रा करते हुए सांसारिक जीवों को परमात्मा के नाम से जोड़ते हुए जालन्धर आए। जालन्धर में आप सरमस्तपुर, बल्लां और रायपुर गाँव में गए। श्री भाना राम जी, श्री इन्द्र राम जी, श्री देवी दिता जी, श्री मांगा राम, स. हजारा सिंह और नगरवासियों ने आप को बहुत आदर सत्कार दिया। गाँव बल्लां का वातावरण खुला और साफ-सुथरा था। यहां पर डेकों के वृक्ष थे। संत सरवण दास जी को यह स्थान बहुत अच्छा लगा। कुछ दिन संगत को परमात्मा के नाम से जोड़ने के बाद आप गाँव बल्लां को छोड़ कर गाँव सिंगड़ीवाला श्री लालू दास जी के निवास स्थान पर गए। इसके पश्चात् संत सरवण दास जी ने महाराज पिप्पल दास जी से निवेदन किया कि पिता जी मेरा मन यहां नहीं लगता। आप मुझे डेकों वाले गाँव ले चलो। बाबा पिप्पल दास जी संत सरवण दास जी को साथ लेकर गाँव बल्लां आ गए। गाँव बल्लां आने पर संगत ने आप का बहुत स्वागत किया और आप जी से पहले से भी अधिक प्रेम करने लगे। उस दिन से ही आप जी ने गांव बल्लां में रहने का दृढ़ निश्चय कर लिया। गाँव की संगत ने आप जी के रहने के लिए गाँव में एक कच्चा मकान दे दिया। इस स्थान पर सुबह शाम आप संगत को परमात्मा के नाम से जोड़ते। उस समय गाँव में एक पीपल का पेड़ था जो सूख चुका था। गाँव बल्लां के लोगों ने बाबा पिप्पल दास जी से विनती की कि महाराज जी गर्मियों के दिनों में लोग इस पीपल के पेड़ की छाया में बैठते हैं, आप कृपा करो ताकि पह पीपल का पेड़ फिर से हरा-भरा हो जाए। बाबा पिप्पल दास जी ने उस सूखे हुए पीपल के पेड़ को पानी डाला। कुछ ही दिनों के बाद वह पीपल का पेड़ फिर से हरा-भरा होने लगा। इसके पश्चात आप का नाम हरनाम दास से बाबा पिप्पल दास पड़ गाया।

Mark Juergens Meyer अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **Religious Rebels in the Punjab** पेज़ 84 में लिखते हैं-**Sant Pipal Dass, established the Dera at that location, near village Ballan, around the turn of the century while wandering in search of truth. When he encountered the place, he found a pipal tree, which appeared to be dead, but after he waterd it, it sprang back to life, Pipal Dass understood this as a clear indication that truth was to be obtained on that spot, so he solicited nearby villagers to donate the land and began constructing his Dera. It soon became the goal of land and began constructing his dera. It soon became the goal of pilgrimage for lower caste and other villagers from all over enteral Punjab, and from its inception it was a center for the veneration of Guru Ravidass.**

बाबा पिप्पल दास जी ने यह डेरा उस समय स्थापित किया, जब वह सच की तलाश में यात्रा पर चले थे। जब उन्होंने इस स्थान पर रहते हुए देखा कि पीपल का पेड़ सूखा हुआ है तो उन्होंने इस पेड़ को पानी डाला तो यह फिर से हरा हो गया। इस तरह बाबा पिप्पल दास जी को यह विश्वास हो गया कि इस स्थान पर बैठ कर ही असल सच्चाई की खोज की जा सकती है। गाँव वालों ने आप जी को भूमि दान की, जिस पर आप जी ने डेरे के निर्माण का कार्य शुरु कर दिया। वह जल्द ही अछूत कहे जाने वाले लोगों का रुहानी केंद्र बन गया, जो खास कर मध्य पंजाब से सम्बन्ध रखते थे। यह गुरु रविदास महाराज जी के पैरोकारों का प्रमुख्य स्थान है।

आप दिन के समय पश्चिम्र की ओर बालक सरवण दास जी को साथ लेकर एकांत में सिमरन किया करते थे जहां बहुत भयानक जंगल था। आज उसी स्थान पर डेरा सच्च खण्ड़ बल्लां सुशोभित है। आप जी ने एक पाठशाला खोली। आप बच्चों को पंजाबी एंव बाणी का अध्ययन करवाते थे और सतिगुरु रविदास जी के जीवन और मिशन से जोड़ा करते थे। संगत हर रोज आप के लिए प्रेम से भोजन लाती थी। आप संगत को हमेशा बच्चों को पढ़ाने, समाजिक बुराईयों और कर्म-कांडों से दूर रहने, नशे से दूर रहने, माता-पिता की सेवा करने और आपस में प्रेम से रहने का उपदेश दिया करते थे। जब महान् समाज सुधारक बाबू मंगू राम मूगोवालिया आदि धर्म की स्थापना के लिए संघर्ष कर रहे थे, उस समय बाबू मंगू राम अपने गुरु साहिबानों-महात्रृषि बालमीकि जी, सतगुरु नाम देव जी, सतगुरु रविदास जी और सतगुरु कबीर साहिब जी के इतिहास को इक्ट्ठा कर रहे थे तो उस समय बाबू मंगू राम जी गुरु रविदास जी की शिक्षाऐं और लिखितों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए बाबा पिप्पल दास जी के पास आए थे।

यह सच्चाई है कि संत महापुरुषों के मुख से निकला हुआ और हर वचन अटल सिद्ध होता है। ऐसे ही संत बाबा पिप्पल दास जी के मुख से जो भी बचन निकलता, अटल होता था। एक बार जब आप अपने सेवक शामी राम के गृह में गांव हरीपुर गए तो आप जी ने वहां सत्संग किया और संगत को परमात्मा के नाम के साथ जुड़ने का उपदेश दिया। शामी राम के गृह में एक कोठी (जिसमें गेहूं डाला जाता था) थी, जिसमें वह पूरे साल के लिए गेहूं डालते थे। बाबा पिप्पल दास जी ने वचन किया कि यह कोठी गेहूं से भरी रहेगी। ऐसा ही हुआ। जब तेरह महीनों के बाद शामी राम जी ने सोचा कि गेहूं खत्म हो गई होगी, अब एक साल के लिए और गेहूं कोठी में डाल देनी चाहिए तो उन्होंने देखा कि कोठी पहले से ही गेहूं से भरी पड़ी है।

इसी तरह ही एक बार आप गाँव अर्जनवाला में गए। वहां एक माता प्रभी सुपत्नी श्री वरियामा जी ने आप को विनती की कि महाराज जी मेरे कोई औलाद नहीं है। मेरी सास मुझे घर से निकाल देना चाहती है। बाबा पिप्पल दास जी ने उसके सिर पर हाथ रख कर आर्शीवाद देते हुए कहा कि तेरे घर पाँच पुत्रों का जन्म होगा। बाबा पिप्पल दास जी की कृपा से ज्ञानी जोगिन्द्र सिंह जी के समेत पाँच लड़कों ने जन्म लिया।

बाबा पिप्पल दास जी महाराज सुबह के भोजन के लिए गाँव बल्लाँ में ही जमीदारों के घरों से भिक्षा लेने के लिए जाते थे। रास्ते में सब गाँव वासी आदर पुर्वक बाबा जी को नमस्कार करते और आशीर्वाद लेते। एक बार बाबा जी सुबह के समय जब भिक्षा लेने गए तो नंबरदार प्यारा सिंह के घर के सामने पहुंचे। माता माहों कौर उनको देख कर झट से भिक्षा लेकर आई। बाबा पिप्पल दास जी को बहुत ही आदर सत्कार से भोजन भेंट किया। बाबा जी के चरनों में नमस्कार की और विनती की कि आप सब की इच्छाएं पूरी करने वाले हो। आप मुझ पर भी कृपा करो जी। घर में पदार्थ और सुख प्राप्त है पर एक चीज की कमी है। मेरे कोई औलाद नहीं है। आप मुझे पुत्र की बख्शिश करो जी।

बाबा पिप्पल दास जी बड़े दयालू थे। माता माहों कौर की विनम्र भाव से की हुई विनती सुनकर बाबा जी एक दम दयाल हो गए और आशीर्वाद देते हुए कहा कि तुम्हारे भाग्य में परमात्मा ने पाँच पुत्र और एक पुत्री लिखी है। तुम्हे उदास नहीं होना चाहिए। तुम सुबह-शाम जब भी समय मिले परमात्मा का सिमरन किया करो। अनमोल बचन करते हुए बाबा पिप्पल दास जी भिक्षा ले कर डेरे में वापिस आ गए। कुछ समय के पश्चात् माता माहों कौर जी

(शेष भाग पृष्ठ 3 पर)

ब्रह्मज्ञानी श्री 108 संत पिप्पल दास जी महाराज

(पृष्ठ 2 का शेष भाग)

के घर पाँच पुत्रों और एक पुत्री ने जन्म लिया। माता माहों कौर के सभी बच्चे बाबा पिप्पल दास जी के आशीर्वाद से बड़े गुणवान हैं। बाबा जी के वचन अटल हुए। आज तक सारा परिवार बाबा जी की उपमा गाता है और डेरा सच्च खण्ड बल्लाँ का श्रद्धालु है। श्री बतन सिंह को भी औलाद की बख्शिश की। श्री बतन सिंह जी और माता केसरी देवी गाँव मुरादपुर रहते थे। बाद में वे अलावलपुर रहने लगे। बाबा जी उनके घर जाते तो कहते कि नमक की रोटी (चपाती) बनाओ और वे नमक वाली रोटी ही खाते थे। एक बार बाबा जी उनके घर मुरादपुर गए। बतन सिंह और माता केसरी देवी ने विनती की कि महाराज हमारे घर में कोई औलाद नहीं है। बाबा जी ने कहा पाँच पतासे पानी में मिला कर, उस पानी से आटा गुंध कर रोटी (प्रशादा) बनाओ। खाना तैयार किया गाया। बाबा जी ने भोजन किया और बतन सिंह से कहा कि कोई फिकर नहीं करना, तुम्हारे घर में चार पुत्र होंगे। ऐसा ही हुआ। बतन सिंह के घर सरवन सिंह समेत चार पुत्रों का जन्म हुआ।

आदरणीय गुरुप्रेमियों एक बार बाबा पिप्पल दास जी ग्राम बल्लां की ओर जा रहे थे तो रास्ते में श्री मल सिँह ने महाराज जी को प्रणाम किया। महाराज जी ने जब परिवार का कुशल-क्षेम पूछा तो मल सिँह ने कहा, ''महाराज जी! हम बहुत परेशान हैं। मेरे भाई की पत्नी चल बसी है तथा मेरा भाई स॰ नत्था सिंह सुपुत्र सरदार सुंदर सिंह की कमर पर चोट लगी हुई है। कृपा करके हमारे परिवार की डूबती नैया उबारो जी।'' बाबा पिप्पल दास जी ने फरमाया कि चिंता न करो। आप के भाई की प्रभु कृपा से शादी होगी तथा आपके घर पर बच्चों की किलकारियां गूंजेगी। बाबा जी के वचन अटल सिद्ध हुए। सरदार नत्था सिँह कुछ माह बाद स्वस्थ हो गए तथा उनकी शादी हुई। सरदार नत्था सिँह के सुपुत्र सरदार अजीत सिँह ने बताया कि आज बाबा जी को अनुकम्पा से हम आज 7 भाई और एक बहन है। यह सब कुछ संतों की देन है।

आप जी संगत को परमात्मा के नाम से जोड़ते हुए विक्रमी संवत 1985 (सन 1928) 26 आश्विन दिन गरुवार पूर्व नक्ष सुबह के समय पहले नवरात्रे पर प्रभु में विलीन हो गए। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध कवि तोता राम जी लिखते है:-

उन्नी सौ पचासी सन विक्रमी महीना अस्सू,
छब्बी दिन गए दिती गुलजार सी।
वीरवार दिन फिर टाईम भी सवेर वाला,
पूर्व नक्ष मे पुज्जे मोख के दुआर सी।

बाबा पिप्पल दास जी के पाँच तव्वों के शरीर का संसकार गाँव बल्लां में पूर्व की ओर किया गया, जहां आप जी का अग्नि स्थल है। डेरा सच्च खण्ड बल्लां में बाबा जी की याद में 'समाधि' गुंबद वाला कमरा है जिस में बाबा जी की मूर्ति सुशोभित है। आप जी के बाद संत सरवण दास जी डेरे के संचालक बने। बाबा पिप्पल दास जी महाराज की याद में हर वर्ष पहले नवरात्रे के दिन उनका बरसी समागम मनाया जाता है और डेरे में निशान साहिब झुलाए जाते हैं। धन्यावाद सहित पुस्तक (1)**Religious Rebels in the Punjab**, (2)इतिहास डेरा सच्च खण्ड बल्लां में से।

ਦਲਿਤਾਂ ਦੇ ਰਹਿਬਰ,

ਰੂਹਾਨੀਅਤ ਦੇ ਪੁੰਜ

ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਬਾਬਾ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ

ਬਰਸੀ ਸਮਾਗਮ 'ਤੇ

ਸ਼ਰਧਾ ਅਤੇ ਸਤਿਕਾਰ ਭਰੀ ਸ਼ਰਧਾਂਜਲੀ ਭੇਟ ਕਰਦੇ ਹਾਂ

ਗੁਰੂ ਘਰ ਦੇ ਸ਼ਰਧਾਲੂ ਅਤੇ ਸਮਾਜ ਸੇਵਕ ਸ੍ਰੀ ਸਵਰਨ ਦਾਸ ਬੰਗੜ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਧਰਮ ਪਤਨੀ ਬੀਬੀ ਰੇਸ਼ਮ ਕੌਰ ਅਤੇ ਪਰਿਵਾਰ (ਯੂ.ਕੇ.) ਨਿਵਾਸੀ।

श्री 108 संत पिप्पल दास जी महाराज के बर्सी समागम पर श्रद्धा से पुष्प भेंट करते हैं

॰ श्री गुरु रविदास जन्म स्थान पब्लिक चैरीटेबल ट्रस्ट, वाराणसी यू.पी.। अखिल भारतीय रविदासिया धर्म संगठन (रजि.),भारत। सद्‌गुरु रविदास साधु संप्रदाय सोसायटी, हरियाणा। हिमाचल प्रदेश श्री गुरु रविदास महासभा। ॰ अखिल भारतीय सद्‌गुरु रविदास महासभा महाराष्ट्र। ॰ दलित यूथ फैडरेशन आफ इंडिया। ॰ श्री गुरु रविदास साहित संस्था पंजाब। ॰ श्री गुरु रविदास धर्म युद्ध मोर्चा पंजाब। श्री गुरु रविदास टाईगर फोर्स पंजाब। श्री गुरु रविदास फोर्स पंजाब। ॰श्री गुरु रविदास इंटरनैशनल आर्गेनाईजेशन फॉर ह्यूमन राईटस (रजि.) यू.के. ॰ श्री गुरु रविदास सुप्रीम कौंसिल (इटली)। ॰ श्री गुरु रविदास सुप्रीम कौंसिल (यू.के.) ॰ श्री गुरु रविदास जी सभा (रजि.) ग्रीस। ॰ संत सरवण दास वैल्फेयर सोसायटी युरोप। ॰ संत सरवण दास चैरिटेबल ट्रस्ट, (यू॰के॰)। ॰ संत सरवण दास चैरिटेबल ट्रस्ट, कैनेडा। ॰ संत सरवण दास चैरिटेबल ट्रस्ट, अमेरिका। ॰ अदारा बहुजन क्रांति मासिक पत्रिका। ॰ श्री गुरु रविदास वैल्फेयर सोसायटी इटली। ॰ श्री गुरु रविदास वैल्फेयर सोसाइटी, कुवैत। ॰ श्री गुरु रविदास सभा, यू॰ए॰ई॰। ॰ श्री गुरु रविदास सभा, हालैण्ड। ॰ श्री गुरु रविदास सभा, वियाना अस्ट्रिया। ॰ श्री गुरु रविदास भवन सोसायटी, स्पेन। ॰ श्री गुरु रविदास सभा, पुर्तगाल। ॰ रविदासिया कमिऊनिटी वैल्फेयर एसोसीएशन पैरिस, फ्रांस। ॰ श्री गुरु रविदास सभा, उनटारीयो (टरांटो)। ॰ श्री गुरु रविदास सभा, जरमनी। ॰ अखिल भारतीय रविदासिया धर्म संगठन, शाखा सागर (म.प्र.)। ॰ गुरु संत शिरोमणि श्री रविदास समिति छिदवाड़ा (म. प्र.)। ॰ संत रविदास समाज उत्थान समिति सिवनी (म.प्र.)। ॰ गुरु रविदास समाज संगठन, रीवा (म. प्र.), अहिरवार समाज महापरिषद, जबलपुर (म.प्र.), ॰ संत रविदास समाज कल्याण परिषद, बालाघाट (म.प्र.), ॰ अहिरवार सांस्कृतिक कल्याण समिति,इंदौर (म.प्र.), ॰ जागड़ा महासभा, होशंगावाद (म.प्र.) जागड़ा, ॰ सुधार समिति मिस रोड भोपाल (म.प्र.), ॰ अहिरवार समाज सेवा समिति, इटारसी (म.प्र.) जागड़ा, ॰ महासभा शाहपुर बैतूल (म.प्र.), ॰ रविदास गुजराती एकता समिति, देवास (म.प्र.), ॰ अहिरवार समाज परिषद, हरदा (म.प्र.), ॰ रविदास सेवा संस्थान बरखेड़ा बी.एच.एन. भोपाल जिला रविदास सुधार कमेटी, छतरपुर (म.प्र.), ॰ गुरु रविदास मंदिर कमेटी, बांदकपुर जिला दमोह (म.प्र.), ॰ गुरु रविदास मंदिर कमेटी, हिंडोरिया जिला दमोह (म.प्र.), ॰ गुरु रविदास मंदिर समिति, नरसिंहपुर (म.प्र.), ॰ गुरु रविदास मंदिर समिति, खुरई, जिला सागर (म.प्र.), ॰ अहिरवार समाज महापरिषद् जिला शाखा डिंडौरी (म.प्र.)।

ਦਲਿਤਾਂ ਦੇ ਰਹਿਬਰ, ਰੂਹਾਨੀਅਤ ਦੇ ਪੁੰਜ

ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਬਾਬਾ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ

ਬਰਸੀ ਸਮਾਗਮ 'ਤੇ

ਸ਼ਰਧਾ ਅਤੇ ਸਤਿਕਾਰ ਭਰੀ ਸ਼ਰਧਾਂਜਲੀ ਭੇਟ ਕਰਦੇ ਹਾਂ

ਵਲੋਂ—ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰਮੁਖ ਰਾਮ ਵਿਰਦੀ ਅਤੇ ਪਰਿਵਾਰ ਦਿੱਲੀ, ਸ੍ਰੀ ਹਰਮੇਸ਼ ਜਨਾਗਲ ਅਤੇ ਪਰਿਵਾਰ, ਸੇਠ ਬ੍ਰਿਜ ਲਾਲ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਧਰਮ ਪਤਨੀ ਬੀਬੀ ਗੁਰਦੇਵ ਕੌਰ ਅਤੇ ਪਰਿਵਾਰ, ਸੇਠ ਦੇਸ ਰਾਜ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਧਰਮ ਪਤਨੀ ਬੀਬੀ ਕਮਲੇਸ਼ ਕੌਰ ਪਰਿਵਾਰ ਹਦੀਆਬਾਦ, ਫਗਵਾੜਾ (ਕਪੂਰਥਲਾ)

ਸੰਤ ਸਮਾਜ ਦੇ ਸਿਰਮੌਰ

ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਬਾਬਾ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ

ਬਰਸੀ ਸਮਾਗਮ 'ਤੇ

ਸ਼ਰਧਾ ਦੇ ਫੁੱਲ ਭੇਟ ਕਰਦੇ ਹਾਂ

ਵਲੋਂ—

ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਸਭਾ (ਵਿਆਨਾ) ਆਸਟਰੀਆ।

ਨਾਮ ਦੇ ਰਸੀਏ, ਮਹਾਨ ਸਮਾਜ ਸੁਧਾਰਕ

ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਬਾਬਾ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ ਬਰਸੀ ਸਮਾਗਮ ਉੱਤੇ ਸ਼ਰਧਾ ਦੇ ਫੁੱਲ ਭੇਟ ਕਰਦੇ ਹਾਂ।

ਵਲੋਂ—

ਸ. ਗੁਰਦਿਆਲ ਸਿੰਘ ਪ੍ਰਧਾਨ, ਸ਼੍ਰੀ ਦੇਸ ਰਾਜ, ਸ਼੍ਰੀ ਬਲਵੀਰ ਬੰਗੜ ਅਤੇ ਸ਼੍ਰੀ ਰਵਿੰਦਰ ਕੁਮਾਰ ਸਟਾਫ ਮੈਂਬਰ ਅਦਾਰਾ ਬੇਗਮਪੁਰਾ ਸ਼ਹਿਰ।

अध्यात्मिक और सिमरन के पुंज-सतगुरु स्वामी पिप्पल दास जी

भारत में अनादि काल से ही सृष्टिकर्ता के उत्कृष्ट नाम का सिमरन करने के प्रमाण मिलते हैं। ऋषि-मुनि, साधु-संत, योगी-सन्यासी, पहाड़ों की चोटियों में जाकर या घने वनों में तपोस्थान स्थापित कर, घने वृक्षों के नीचे बैठ कर, शाखायों व घास-फूस की कुटिया में आश्रम लेकर, प्रभु भक्ति में लीन रहते थे। परन्तु उनमें से बहुत से ऋषियों का उद्देश्य केवल निजस्वार्थ होता था। विश्व के कल्याण हित उनका कोई उद्देश्य था ही नहीं। वे परिवारिक बंधनों से मुक्त रहकर, प्रभु का सिमरन करके, कई प्रकार के शारीरिक कष्ट सहते हुए, केवल अपने लिए स्वर्ग की कामना में जुटे रहते थे। अर्थात् उनका स्वार्थ केवल अपने निज को ही संवारना होता था। परन्तु मध्यकाल में हुए संत-गुरुओं ने इस प्रथा को तोड़ा व गुरु रविदास जी, संत कबीर जी तथा कई अन्य संत-महापुरुषों ने अपने समय से रूढ़िवादी मानव विरोधी कुरीतियों को जड़ से उखाड़ कर, मानवता को संकीर्णता की भावना से बाहर निकालने के सार्थक प्रयत्न किए थे। उसी प्रकार अपने सतगुरुओं द्वारा दर्शाए हुए लोक-कल्याणकारी मार्ग को अपना कर, समाज को मानववादी सोच के अद्भुत कुंभ में स्नान कराने का, अद्भुत संकल्प धारण कर, संत स्वामी पिप्पल दास जी ने अद्भुत लोक कलयाण का अलौकिक मार्ग चुना था। गिल-पत्ती ज़िला बठिंडा में बाबा पिप्पल दास जी का आगमन हुआ।

साहित्यकारों के मतानुसार जगत्गुरु रविदास महाराज जी का नाम अवतरित होने के अनुसार ही रविदास रखा गया था। इतवार को रविवार कहते हैं, परन्तु कुछ विद्वानों का मत था कि मस्तिष्क पर सूर्य के समान दहकते तेज को देखते हुए उनका नाम रविदास रखा गया था। इसी प्रकार बाबा पिप्पल दास जी का नाम पिप्पल दास भी इसी प्रकार था, जिसकी भारतवर्ष में अनादिकाल से पूजा हो रही हैं। यह नाम उनके माता-पिता द्वारा साधारणतः ही रखा गया था या इसके पीछे भी कोई रहस्य छिपा हुआ है, जिसकी खोज करनी अनिवार्य है। बचपन से ही बालक पिप्पल दास जी का झुकाव प्रभु व सिमरन की ओर रहता था। उनका मन एकांतप्रिय था, परन्तु उनका विवाह बीबी शोभावंती से कर दिया गया। बीबी शोभावंती जी भी अपने पति की तरह आध्यात्मिक विचारों वाली थी, जिस कारण उनका गृहस्थ जीवन सरलता से आगे बढ़ने लगा। गांव गिल-पत्ती से लगभग डेढ़ किलोमीटर दूर बाबा जी की खेती वाली ज़मीन थी, जहां अपने गुरु रविदास जी की भांति बाबा जी काम करते हुए प्रभु भक्ति में लीन रहते थे। प्रभु का नाम जपते, गृहस्थ आश्रम निभाते हुए धार्मिक माता-पिता के घर में एक सुंदर बालक ने जन्म लिया जिसका नाम पवित्र जोड़ी ने मिलकर सरवण दास रखा था। सरवण दास अभी बाल अवस्था में ही थे कि उनके माता जी चल बसे। अपने जीवन साथी की अकाल मृत्यु ने बाबा जी के मन पर गहरा आघात किया। अपने पुत्र को साथ लेकर बाबा जी ने गिल-पत्ती को छोड़कर परमार्थी यात्रा शुरू कर दी।

पंजाब के दो मुख्य दरियाओं सतलुज और ब्यास के बीच की धरती काफी समय से सृजक के दरबार में पुकार कर रही थी कि इस धरती पर बस रही मानवता के उद्धार के लिए किसी दिव्य युगपुरुष या महामानव को भेजा जाए, जो उसकी रमणीक भूमि पर बसे पिछड़े वर्गों में जागृति पैदा कर उन्हें सहारा प्रदान करे व उन्हें स्वावलम्बी बनाने में सहायक हो और समाज का सुदृढ अंग बनने में, अपना बहुमूल्य योगदान दे। इसके अतिरिक्त चारों ओर आध्यात्मिक वातावरण की फसल पैदा कर लोगों, को मार्गदर्शन करे। दोआबा की धरती की पुकार स्वर्गलोक में प्रवाण हुई और बाबा पिप्पल दास जी, प्रभु के आदेशानुसार, कृषि का कार्य अपने बड़े पुत्र सेवा दास जी को सौंप कर व छोटे पुत्र सरवण दास जी को साथ बठिंडा की रेतली भूमि से चलकर, विभिन्न स्थानों की यात्रा करते हुए दोआबा की हरियाली धरती पर पहुंच गए। बाबा पिप्पल दास जी गिल-पत्ती से अपने मन की गहराई तक, अद्भुत प्रभु भक्ति की आलौकिक ज्योति लेकर गांव बल्लां ज़िला जालन्धर पधारे थे, उनके तन पर प्रभु नाम में रंगे साधारण वस्त्र थे व सिर पर प्रभु की कृपा थी। बल्लां में उन्होंने घास-फूस की कुटिया में सृष्टिकर्ता द्वारा बख्शिश लोक कल्याणकारी कार्य आरम्भ कर दिए। गिल-पत्ती गांव के पास अपने खेतों में विभिन्न फसलें उगाते हुए, संत पिप्पल दास जी बल्लां में डेरा डालकर, आध्यात्मिक फसल उगाने में लीन हो गए, जहां उनका संपर्क अन्य साधु-संतों के साथ होता गया, जिससे उनके लोक कल्याणकारी व लोक सेवा के कार्यों को और बल मिलता गया। बाबा जी ने संगतों को प्रभु सिमरन करवाते हुए उत्कृष्ट सत्संग से जोड़ा। इस प्रकार गुरु रविदास जी के महान् कथन-सत संगति मिलि रहिए माधउ जैसे मधुप मखीरा, के अनुसार सत्संग का आयोजन करते थे, जिसमें क्षेत्र की संगतें हर्षोल्लास से पहुंचती हुई, और अमृतवर्षा से नामरूपी मोतियों के साथ मालामाल होकर घरों को लौटती। आप जी के पावन चरणों में रहकर अनेक महापुरुषों ने आध्यात्मिक शिक्षा ग्रहण की। बाबा पिप्पल दास जी का संत करतानंद जी व संत हरनाम दास जी से विशेष सानिध्य था। उन्होंने अपने पुत्र संत सरवण दास जी को शिक्षा ग्रहण करने के लिए संत करतानंद जी के चरणों से जोड़ा। इसी प्रकार उन्होंने अपने प्रिय पुत्र को प्रभु नाम की अमूल्य बख्शिश संत स्वामी हरनाम दास जी से ग्रहण करवाई थी। जिस आलौकिक कार्य के लिए ईश्वर ने बाबा पिप्पल दास जी को दोआबा की धरती पर भेजा, क्षेत्र में प्रभु सिमरन और आध्यात्मिक फसल बो कर उन्होंने उस कार्य को सम्पूर्ण किया। बाबा जी की उस बोयी हुई फसल के परिणाम स्वरूप डेरा सच्चखण्ड बल्लां ज़िला जालन्धर में हरि के निशान साहिब झूल रहे हैं। इस डेरे में विश्व भर से श्रद्धालु आकर अपनी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। डेरा बल्लां के मौजूदा वर्तमान् गद्दीनशीन श्री 108 संत निरंजन दास जी महाराज, संत बाबा पिप्पल दास जी महाराज, संत सरवण दास जी महाराज, संत स्वामी हरी दास जी महाराज और संत गरीब दास जी महाराज के दर्शाए मार्ग पर चलकर डेरे की प्रगति के लिए यत्नशील हैं। गुरु रविदास जी के बेगमपुरा के सिद्धांत को विश्व में प्रचारित करने हेतु प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं। श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी आध्यात्मिक कार्यों में सतगुरु निरंजन दास महाराज जी के आदेशों की पालना करने के लिए तत्पर हैं। नए ऐलान हुए रविदासिया धर्म की प्रगति के लिए प्रयत्नशील हैं। कौम के अमर शहीद संत रामानंद जी महाराज उच्चारण करते हैं-

धन गुरु पिपल दास जी प्यारे।
जाईए आप जी के बलिहारे।
आये बल्लां गांउं मझारी।
बढे दानी बढे परउपकारी।
दुखियों की सेवा परथाये।
तन, मन, धन, सब दिओ लुटाए।

भूली भटकी मानवता को प्रदर्शित मार्ग के यात्री बनाकर श्री 108 संत पिप्पल दास जी, सन् 1928 के अश्विन मास की 26 तारीख दिन गुरुवार की प्रातः प्रभु चरणों में विलीन हो गए थे। उनके परमार्थी जीवन से लाभ व प्रेरणा लेकर संत-मुनियों के साथ-साथ असंख्य मानव भी अपने जीवन को खुशहाल बनाने में व्यस्त है।

लेखक : सिरी राम अर्श
204, सैक्टर 65, मोहाली

ਡੇਰਾ ਸੱਚਖੰਡ ਬੱਲਾਂ ਦਾ e-mail ਐਡਰੈੱਸ
sachkhandballan@yahoo.co.in

ਸੂਚਨਾ-'ਬੇਗਮਪੁਰਾ ਸ਼ਹਿਰ ਪੱਤ੍ਰਿਕਾ' ਦੀ ਆਨ ਲਾਈਨ ਸੇਵਾ (Internet Service) ਦੇਖੋ
www.begumpurashaher.net.

ਸੂਚਨਾ-'ਬੇਗਮਪੁਰਾ ਸ਼ਹਿਰ ਪੱਤ੍ਰਿਕਾ' ਦਾ E-mail ਐਡਰੈੱਸ
begumpurashaher@yahoo.com

ਸੂਚਨਾ-ਲੇਖਕਾਂ ਦੀਆਂ ਰਚਨਾਵਾਂ ਨਾਲ ਮੁੱਖ ਸੰਪਾਦਕ ਤੇ ਸੰਪਾਦਕੀ ਮੰਡਲ ਦਾ ਸਹਿਮਤ ਹੋਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਨਹੀਂ।

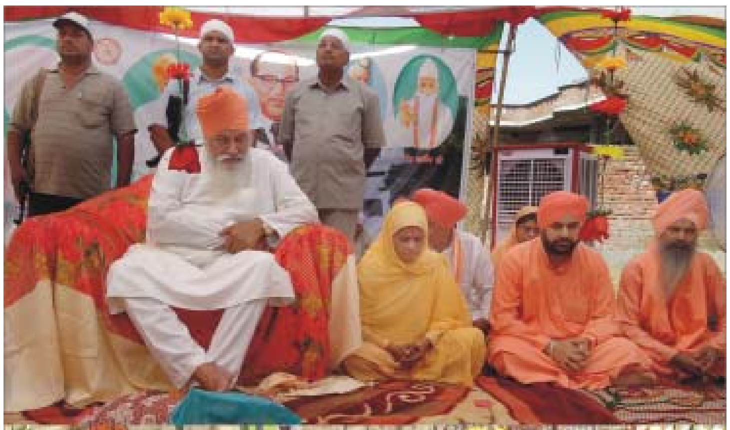

ਪਿੰਡ ਧਰਮਪੁਰ ਮੁਕੇਰੀਆਂ ਵਿਖੇ ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ ਸੰਤ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਜੀ ਦਾ ਬਰਸੀ ਸਮਾਗਮ ਅਤੇ ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਧਰਮ ਦੇ ਮਹਾਨ ਸ਼ਹੀਦ ਸੰਤ ਰਾਮਾਨੰਦ ਜੀ ਦਾ ਸ਼ਹੀਦੀ ਸਮਾਗਮ ਸ਼ਰਧਾ ਸਹਿਤ ਮਨਾਇਆ

ਮਿਤੀ 20-9-2011, (ਕੁਲਵੰਤ ਕਜਲਾ)—ਡਾ. ਭੀਮ ਰਾਓ ਅੰਬੇਡਕਰ ਸ਼ੋਸਲ ਵੈਲਫੇਅਰ ਸੁਸਾਇਟੀ (ਰਜਿ.) ਅਤੇ ਇਲਾਕੇ ਦੀਆਂ ਸਮੂਹ ਸੰਗਤਾਂ ਵਲੋਂ ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ ਸੰਤ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦਾ 40ਵਾਂ ਬਰਸੀ ਸਮਾਗਮ ਅਤੇ ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਧਰਮ ਦੇ ਮਹਾਨ ਅਮਰ ਸ਼ਹੀਦ ਸੰਤ ਰਾਮਾਨੰਦ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦਾ ਦੂਸਰਾ ਸ਼ਹੀਦੀ ਸਮਾਗਮ ਅਤੇ ਮਹਾਨ ਸੰਤ ਸੰਮੇਲਨ ਸ੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੀ ਸਰਪ੍ਰਸਤੀ ਅਤੇ ਸੰਤ ਸੁਰਿੰਦਰ ਦਾਸ ਬਾਵਾ ਜੀ ਦੀ ਦੇਖ-ਰੇਖ ਹੇਠ ਸ਼ਰਧਾ ਸਹਿਤ ਮਨਾਇਆ ਗਿਆ। ਜਿਸ ਦੇ ਸਬੰਧ ਵਿਚ ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਦੇ ਜਾਪ ਕਰਵਾਏ ਗਏ। ਆਰਤੀ ਦਾ ਗਾਇਨ ਗਿਆਨੀ ਨਰਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਹੈਰੀ ਜੀ, ਗਿ. ਸਾਧੂ ਸਿੰਘ ਜੀ, ਗਿ. ਇੰਦਰਜੀਤ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ ਕੀਤਾ। ਸਮੁੱਚੀ ਮਾਨਵਤਾ ਦੇ ਭਲੇ ਲਈ ਗੁਰੂ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਅੱਗੇ ਅਰਦਾਸ ਬੇਨਤੀ ਕੀਤੀ ਗਈ। ਉਪਰੰਤ ਦੀਵਾਨ ਕੀਰਤਨ ਸਜਾਏ ਗਏ ਜਿਸ ਵਿਚ ਸ੍ਰੀ ਵਿਜੈ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ 'ਸਾਨੂੰ ਮੀਰਾਂ ਵਾਲੀ ਲਗਨ ਲਗਾ ਦੇ ਤੇਰਾ ਕਿਹੜਾ ਮੁੱਲ ਲੱਗਦਾ'। ਮਹਿਮਾ ਸਰਵਣ ਕਰਵਾਈ। ਉਪਰੰਤ (ਦਾਸ) ਕੁਲਵੰਤ ਕਜਲਾ ਨੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਦਾ ਸ਼ਬਦ 'ਸਤਿਸੰਗਤ ਮਿਲ ਰਹੀਐ ਮਾਧੋ ਜੈਸੇ ਮਧੁਪ ਮਖੀਰਾ' ਤੇ 'ਰਾਮਾਨੰਦ ਨੰਦ ਜੀ ਐਸਾ ਕਰਮ ਕਮਾ ਗਏ ਨੇ ਜਾਂਦੇ-ਜਾਂਦੇ ਕੌਮ ਦੀ ਅਣਖ ਜਗਾ ਗਏ ਨੇ' ਤੇ 'ਧੰਨ ਸਤਿਗੁਰ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਧੰਨ ਹੈ ਤੇਰੀ ਕਮਾਈ, ਭੁੱਲੀ ਭਟਕੀ ਮਾਨਵਤਾ ਨੂੰ ਸੱਚ ਦੀ ਜੋਤ ਦਿਖਾਈ। ਰਚਨਾਵਾਂ ਸਰਵਣ ਕਰਵਾ ਕੇ ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਨਿਹਾਲ ਕੀਤਾ। ਉਪਰੰਤ ਗਿ. ਮਿਹਰ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ 'ਸਾਚੀ ਪ੍ਰੀਤ ਹਮ ਤੁਮ ਸਿਉ ਜੋਰੀ' ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਦਾ ਸ਼ਬਦ ਸਰਵਣ ਕਰਵਾਇਆ। ਉਪਰੰਤ ਸਨਦੀਪ ਦਾਸ ਜੀ ਨੇ 'ਦੁਆਰ ਦਸਵੇਂ ਦਾ ਖੋਲ੍ਹਦੇ ਨੇ ਤਾਲਾ ਹੈ, ਕੁੰਜੀ ਹੱਥ ਸਾਧੂਆਂ ਦੇ' ਰਚਨਾ ਸਰਵਣ ਕਰਵਾਈ। ਇਸ ਤੋਂ

ਜੈ ਸਤਿਗੁਰੂ
ਰਵਿਦਾਸ ਕਹੋ,
ਸਦਾ ਸੁਖੀ ਰਹੋ।

ਡੇਰਾ 108 ਸੰਤ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਜੀ ਸੱਚਖੰਡ ਬੱਲਾਂ ਵਿਖੇ ਸ਼ਰਧਾਲੂ ਪਰਿਵਾਰਾਂ ਵਲੋਂ ਜਗਤ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੀ ਪਾਵਨ ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਦੇ ਜਾਪ

ਸੇਵਾ, ਸਤਿਸੰਗ ਅਤੇ ਸਿਮਰਨ ਦੇ ਪ੍ਰਤੀਕ ਡੇਰਾ ਸੱਚਖੰਡ ਬੱਲਾਂ ਵਿਖੇ ਸ਼ਰਧਾਲੂ ਪਰਿਵਾਰਾਂ ਵਲੋਂ ਬੀਤੇ ਦਿਨੀਂ ਡੇਰੇ ਵਿਖੇ ਜਗਤਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਦੇ ਪਾਵਨ ਜਾਪ ਕਰਵਾਏ ਗਏ।

ਪਹਿਲੇ ਜਾਪ ਸ੍ਰੀਮਾਨ ਬਲਵੀਰ ਬੰਗੜ ਅਤੇ ਬੀਬੀ ਹੇਮਾ ਸਮੂਹ ਪਰਿਵਾਰ ਵਲੋਂ ਕਾਕੇ ਸੁਖਵੀਰ ਬੰਗੜ ਦੇ ਜਨਮ ਦਿਨ ਦੀ ਖੁਸ਼ੀ ਵਿਚ ਕਰਵਾਏ ਗਏ।

ਦੂਸਰੇ ਜਾਪ ਸ੍ਰੀਮਾਨ ਰਾਮ ਪ੍ਰਕਾਸ਼, ਬੀਬੀ ਹਰਬੰਸ ਕੌਰ ਦੇ ਸਪੁੱਤਰ ਸ੍ਰੀ ਬਲਦੇਵ ਰਾਜ, ਸ੍ਰੀ ਮੈਦਨ ਲਾਲ ਦੇ ਸਾਰੇ ਪਰਿਵਾਰ ਪਿੰਡ ਕੂਪੁਰ-ਢੇਪੁਰ ਵਾਲਿਆਂ ਵਲੋਂ ਪਰਿਵਾਰ ਦੀ ਸੁਖਸ਼ਾਂਤੀ ਲਈ ਕਰਵਾਏ ਗਏ।

ਡੇਰਾ ਸੱਚਖੰਡ ਬੱਲਾਂ ਦੇ ਪਾਵਨ ਦਰਬਾਰ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਸਤਿਸੰਗ ਹਾਲ ਵਿਚ ਸ਼ਰਧਾਲੂ ਪਰਿਵਾਰਾਂ ਵਲੋਂ ਪਰਮ ਪੂਜਿਐ ਸਤਿਕਾਰਯੋਗ ਸਤਿਗੁਰੂ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੀ ਪਾਵਨ ਸਰਪ੍ਰਸਤੀ ਹੇਠ ਜਗਤ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਦੇ ਜਾਪ ਹੋਏ। ਇਸ ਸੁਭਾਗੇ ਸਮੇਂ 'ਤੇ ਸਤਿਕਾਰਯੋਗ ਸੁਆਮੀ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਦੇ ਆਸ਼ੀਰਵਾਦ ਨਾਲ ਪਰਮ ਸਤਿਕਾਰਯੋਗ ਸੰਤ ਸੁਰਿੰਦਰ ਦਾਸ ਬਾਵਾ ਜੀ ਹੁਰਾਂ ਨੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤਮਈ ਰਸਨਾ ਦੁਆਰਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ ਪਾਵਨ ਸ਼ਬਦਾਂ ਰਾਹੀਂ ਸ਼ਰਧਾਲੂ ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ 1 ਘੰਟਾ ਸਤਿਸੰਗ ਸਰਵਣ ਕਰਵਾਇਆ। ਸੰਗਤਾਂ ਪਰਮੇਸ਼ਰ ਦੀ ਮਹਿਮਾ ਸਰਵਣ ਕਰਕੇ ਭਰਪੂਰ ਨਿਹਾਲ ਹੋਈਆਂ ਅਤੇ ਜੀਵਨ ਨੂੰ ਸਫਲਾ ਬਣਾਉਣ ਵਾਸਤੇ ਅਰਦਾਸ ਹੋਈ।

ਉਪਰੰਤ ਸੰਤ ਮੋਹਣ ਦਾਸ ਜੀ ਨੂਰਪੁਰ ਵਾਲਿਆਂ ਨੇ ਸਤਿਗੁਰਾਂ ਦੀ ਮਹਿਮਾ ਸਰਵਣ ਕਰਵਾਈ ਉਪਰੰਤ ਸੰਤ ਲੇਖ ਰਾਜ ਜੀ ਨੂਰਪੁਰ ਵਾਲਿਆਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਵੱਡਮੁੱਲੇ ਪ੍ਰਵਚਨਾਂ ਰਾਹੀਂ ਜਗਤਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਨਾਲ ਜੋੜਕੇ ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਪਰਉਪਕਾਰਾਂ ਤੋਂ ਜਾਣੂ ਕਰਵਾਇਆ। ਉਹਨਾਂ ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ ਸ੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਦੇ ਕੀਤੇ ਹੋਏ ਸਮਾਜ ਭਲਾਈ ਦੇ ਕਾਰਜਾਂ ਬਾਰੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦਿੱਤੀ। ਅਮਰ ਸ਼ਹੀਦ ਸੰਤ ਰਾਮਾਨੰਦ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੀ ਸ਼ਹਾਦਤ ਬਾਰੇ ਬੋਲਦਿਆਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਰਹਿਬਰਾਂ ਦੇ ਮਿਸ਼ਨ ਨੂੰ ਮੰਜ਼ਲ ਤੱਕ ਪਹੁੰਚਾਉਣ ਵਾਲੇ ਅਮਰ ਸ਼ਹੀਦ ਸੰਤ ਰਾਮਾਨੰਦ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੂੰ ਕਦੇ ਵੀ ਨਹੀਂ ਭੁਲਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਉਹਨਾਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਾਨੂੰ ਹਮੇਸ਼ਾ ਹੀ ਆਪਣੇ ਰਹਿਬਰਾਂ ਦੇ ਨਕਸ਼ੇ-ਕਦਮਾਂ ਤੇ ਚੱਲਕੇ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਸੁਪਨਿਆਂ ਨੂੰ ਸਕਾਰ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਉਪਰੰਤ ਸੰਤ ਬੀਬੀ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨਾ ਦੇਵੀ ਜੀ ਬੋਪਰਾਏ ਕਲਾਂ ਵਾਲਿਆਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਵੱਡਮੁੱਲੇ ਪ੍ਰਵਚਨਾਂ ਰਾਹੀਂ ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਨਾਲ ਜੁੜਨ ਦਾ ਵੱਡਮੁੱਲਾ ਗਿਆਨ ਬਖਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਤੋਂ ਉਪਰੰਤ ਸ੍ਰੀ ਕਾਬਲ ਰਾਮ ਟਾਂਡੀ ਵਾਲਿਆਂ ਦੇ ਜੱਥੇ ਨੇ ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਗੁਰੂ ਮਹਿਮਾ ਸਰਵਣ ਕਰਵਾ ਕੇ ਨਿਹਾਲ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਸਮਾਗਮ ਵਿਚ ਸੰਤ ਪ੍ਰੇਮ ਦਾਸ ਜੀ ਰਛਪਾਲਮਾ, ਸੰਤ ਰਾਮ ਗਿਰ ਜੀ, ਸੰਤ ਕੈਲਾਸ਼ ਗਿਰ ਜੀ, ਸੰਤ ਅਮਰ ਦਾਸ ਜੀ, ਸੰਤ ਭਜਨ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ ਸਮਾਗਮ ਵਿਚ ਪਹੁੰਚਕੇ ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਦਰਸ਼ਨ ਦਿੱਤੇ। ਇਸ ਸਮਾਗਮ ਵਿਚ ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਵਿਚ ਪਹੁੰਚਕੇ ਗੁਰੂ-ਜਸ ਸਰਵਣ ਕੀਤਾ। ਪ੍ਰਬੰਧਕਾਂ ਵਲੋਂ ਆਏ ਸੰਤ ਮਹਾਂਪੁਰਸ਼ਾਂ ਦਾ ਸਨਮਾਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਅਤੇ ਸਮਾਗਮ ਨੂੰ ਸਫਲ ਬਣਾਉਣ ਵਾਲੀਆਂ ਸੰਗਤਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਬੰਧਕਾਂ ਵਲੋਂ ਮੋਮੈਂਟੋ ਦੇ ਕੇ ਸਨਮਾਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਇਸ ਸਮਾਗਮ ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੂੰ ਸੰਗਤਾਂ ਨੇ ਜੋ ਮਾਇਆ ਨਮਸਕਾਰ ਕੀਤੀ, ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੇ ਪ੍ਰਬੰਧਕਾਂ ਨੂੰ ਅਸ਼ੀਰਵਾਦ ਵਜੋਂ ਭੇਟ ਕਰ ਦਿੱਤੀ। ਸਮਾਗਮ ਦੀ ਸਮਾਪਤੀ ਉਪਰੰਤ ਗੁਰੂ ਕਾ ਲੰਗਰ ਛਕਾਇਆ ਗਿਆ।

ਵਰ ਦੀ ਲੋੜ

ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਲੜਕੀ 30 ਸਾਲ 5'-1'', M.A., B.ed, IELTS-6 Band, Private Teacher **ਵਾਸਤੇ ਪੜ੍ਹਿਆ-ਲਿਖਿਆ ਲੜਕਾ ਜੋ ਕਿ ਵਿਦੇਸ਼ ਜਾਣ ਦਾ ਚਾਹਵਾਨ ਲੜਕੇ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਹੈ। ਸੰਪਰਕ ਨੰ. 0181-2754969**

ਕੰਨਿਆ ਦੀ ਲੋੜ

ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਲੜਕਾ 29 ਸਾਲ, 5'-4'', B.A., MSc. (Geography) B.ed, **ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸਕੂਲ ਟੀਚਰ ਵਾਸਤੇ ਪੜ੍ਹੀ-ਲਿਖੀ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਮੰਗਲੀਕ ਲੜਕੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਨੰ. 86995-74581, 98556-05520**

-ਗੀਤ-

ਰੱਬ ਚਲ ਕੇ ਬੱਲਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਆ ਗਿਆ ਜੀ ਕਰ ਲਉ ਦੀਦਾਰ ਸੰਗਤੇ

ਰੱਬ ਚਲ ਕੇ ਬੱਲਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਆ ਗਿਆ,
ਜੀ ਕਰ ਲਉ ਦੀਦਾਰ ਸੰਗਤੇ।
ਜਿਹੜਾ ਆ ਗਿਆ ਮੁਰਾਦਾਂ ਸਭੇ ਪਾ ਗਿਆ,
ਜੀ ਕਰ ਲਉ ਦੀਦਾਰ ਸੰਗਤੇ।
ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਨਿਰੰਜਣੀ ਇਹ ਜੋਤੀ ਹੈ।
ਕੁਲ ਦੁਨੀਆਂ ਦੀ ਹੁਣ ਇਨ੍ਹਾਂ ਉਤੇ ਓਟ ਹੈ।
ਨੂਰ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਹੈ ਜੱਗ ਉਤੇ ਛਾ ਗਿਆ,
ਜੀ ਕਰ ਲਉ ਦੀਦਾਰ.............।
ਨਿਹਚਾ ਵਾਲਾ ਆ ਕੇ ਆਸਾਂ ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਪੂਰੀਆਂ।
ਸੱਧਰਾਂ ਜੋ ਮਨ ਦੀਆਂ ਰਹਿਣ ਨਾ ਅਧੂਰੀਆਂ।
ਜਿਹੜਾ ਆਇਆ ਆ ਕੇ ਝੋਲੀਆਂ ਭਰਾ ਗਿਆ।
ਜੀ ਕਰ ਲਉ ਦੀਦਾਰ.....।
ਚਾਰੇ ਪਾਸੇ ਮਹਿਕ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨਾਮ ਦੀ ਖਿਲਾਰੀ ਏ।
ਮਿਹਰਾਂ ਵਾਲਿਆਂ ਦੀ ਵੇਖੀ ਸ਼ਕਤੀ ਨਿਆਰੀ ਏ।
ਇਹ ਸਭ ਦੁਖੀਆਂ ਦੇ ਦੁਖੜੇ ਮੁਕਾ ਰਿਹਾ।
ਜੀ ਕਰ ਲਉ ਦੀਦਾਰ.....।
ਚਿਹਰੇ ਉਤੇ ਸਦਾ ਰਹਿੰਦੀ ਨਾਮ ਦੀ ਖੁਮਾਰੀ ਜੀ।
'ਸਾਹਲੋਂ' ਸਤਪਾਲ ਬਣ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਪੁਜਾਰੀ ਜੀ।
ਨਾਮ ਝੋਲੀ ਵਿਚ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਪੁਆ ਗਿਆ।
ਜੀ ਕਰ ਲਉ ਦੀਦਾਰ ਸੰਗਤੇ।

—ਸਤਪਾਲ ਸਾਹਲੋਂ

ਬਾਬਾ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਜੀ

ਜੋ ਸਾਡੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਵਿਚ ਅੱਜ ਨੇ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਆਈਆਂ।
ਇਹ ਤਾਂ ਬਾਬਾ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਜੀ ਦੀਆਂ ਨੇਕ ਕਮਾਈਆਂ।
ਕੌਮ ਦੇ ਦੁੱਖ ਹਰਨੇ ਨੂੰ ਗਿੱਲ ਪੱਤੀਓਂ ਚਲ ਕੇ ਆਏ।
ਜਲੰਧਰ ਦੇ ਪਿੰਡ ਬੱਲਾਂ ਵਿਚ ਆ ਕੇ ਡੇਰੇ ਲਾਏ।
ਬਾਬਾ ਜੀ ਘੋਰ ਹਨੇਰ ਜੰਗਲਾਂ 'ਚ ਕੀਤੀਆਂ ਰੁਸ਼ਨੀਆ।
ਜੋ ਸਾਡੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਵਿਚ......................।
ਕੌਮ ਦੇ ਮਸੀਹਾ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਗੁਰਾਂ ਨੂੰ ਨਾਲ ਲਿਆਏ।
ਇਹ ਧਰਤੀ ਹੋ ਗਈ ਭਾਗਾਂ ਵਾਲੀ ਜਦ ਗੁਰਾਂ ਨੇ ਪੈਰ ਸੀ ਪਾਏ।
ਗੁਰਾਂ ਦੇ ਰੂਹਾਨੀ ਮੁਖੜੇ 'ਤੇ ਨਾ ਜਾਣ ਨਜ਼ਰਾਂ ਟਿਕਾਈਆਂ।
ਜੋ ਸਾਡੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਵਿਚ......................।
ਪਿੰਡ ਬੱਲਾਂ 'ਚ ਸੁੱਕੇ ਪਿੱਪਲ ਨੂੰ ਬਾਬਾ ਜੀ ਨੇ ਪਾਣੀ ਪਾਇਆ।
ਕੁਝ ਕੁ ਦਿਨਾਂ 'ਚ ਸੁੱਕਾ ਪਿੱਪਲ ਦੇਵੇ ਸੰਘਣੀ ਛਾਇਆ।
ਬਾਬਾ ਜੀ ਦੀ ਯਾਦ ਵਿਚ ਸੰਗਤਾਂ ਹਰਿ ਨਿਸ਼ਾਨ ਲੈ ਕੇ ਆਈਆਂ।
ਜੋ ਸਾਡੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਵਿਚ......................।
ਕੋਟਿਨ-ਕੋਟਿ ਵਾਰ ਬਾਬਾ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਜੀ ਨੂੰ ਸੀਸ ਝੁਕਾਉਂਦੇ।
ਪਹਿਲਾ ਨਵਰਾਤਾ ਬਾਬਾ ਜੀ ਯਾਦ ਵਿਚ ਮਨਾਉਂਦੇ।
'ਮਨਜੀਤ' ਨਿਮਾਣਾ ਕੀ ਕਰੇ ਤੁਸਾਂ ਦੀਆਂ ਵਡਿਆਈਆਂ।
ਜੋ ਸਾਡੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਵਿਚ......................।
ਜੋ ਸਾਡੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੇ ਵਿਚ ਅੱਜ ਨੇ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਆਈਆਂ।
ਇਹ ਤਾਂ ਬਾਬਾ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਜੀ ਦੀਆਂ ਨੇਕ ਕਮਾਈਆਂ।

—ਮਨਜੀਤ ਰਾਏ ਬੱਲਾਂ

ਸੰਗਤਾਂ ਤਾਂਹੀ ਆਉਂਦੀਆਂ ਨੇ

ਸੱਚਖੰਡ ਬੱਲਾਂ ਵਿਚ ਅਵਤਾਰ, ਜੀ ਸੰਗਤਾਂ ਤਾਂਹੀ ਆਉਂਦੀਆਂ ਨੇ,
ਮਿਲਦਾ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਦਾ ਪਿਆਰ, ਜੀ ਸੰਗਤਾਂ ਤਾਂਹੀ ਆਉਂਦੀਆਂ ਨੇ।
ਸਤਿਗੁਰ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਜੀ ਇਥੇ ਕੀਤੀ ਘੋਰ ਕਮਾਈ,
ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਦੀ ਰਹਿਮਤ ਇਥੇ ਕਣ-ਕਣ ਵਿਚ ਸਮਾਈ,
ਇਥੇ ਤਰਦੇ ਕਈ ਹਜ਼ਾਰ, ਜੀ ਸੰਗਤਾਂ ਤਾਂਹੀ ਆਉਂਦੀਆਂ ਨੇ।
ਦੁੱਖੀਆਂ ਦੇ ਕਲਿਆਣ ਲਈ ਇਥੇ ਕੀਤੇ ਕਈ ਉਪਰਾਲੇ,
ਹਸਪਤਾਲ ਨੇ ਖੋਲ੍ਹ ਦਿੱਤੇ ਤੇ ਖੋਲ੍ਹੇ ਕਈ ਵਿਦਿਆਲੇ,
ਕਈ ਦੁੱਖਾਂ ਦੇ, ਆਪ ਜੀ ਵੈਦ, ਜੀ ਸੰਗਤਾਂ ਤਾਂਹੀ ਆਉਂਦੀਆਂ ਨੇ।
ਦੁੱਖ-ਸੁੱਖ ਸੰਗਤਾਂ ਦੇ ਨੇ ਸੁਣਦੇ, ਕਰਦੇ ਦੁਖਾਂ ਦੇ ਨਿਪਟਾਰੇ,
ਕੌਮ ਦੇ ਬਾਨੀ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਦੇ ਲੈ ਕੇ ਜਾਣ ਦੁਆਰੇ,
ਸਦਾ ਏਕੇ ਦਾ, ਕਰਦੇ ਪ੍ਰਚਾਰ, ਜੀ ਸੰਗਤਾਂ ਤਾਂਹੀ ਆਉਂਦੀਆਂ ਨੇ।
ਸਤਿਗੁਰੂ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਜੀ ਕੌਮ 'ਤੇ ਵੱਡਾ ਕਰਮ ਕਮਾਇਆ,
ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦਾ ਮੰਦਿਰ ਸੁਖਵਿੰਦਰਾ 'ਕਾਂਸ਼ੀ' ਵਿਚ ਬਣਾਇਆ,
ਕੀਤਾ ਕੌਮ 'ਤੇ ਵੱਡਾ ਉਪਕਾਰ, ਜੀ ਸੰਗਤਾਂ ਤਾਂਹੀ ਆਉਂਦੀਆਂ ਨੇ।

ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਧਰਮ, ਡੇਰਾ ਸੱਚਖੰਡ ਬੱਲਾਂ ਤੇ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ

ਡੇਰਾ ਸੱਚਖੰਡ ਬੱਲਾਂ (ਜਲੰਧਰ) ਭਾਰਤ ਦੀ ਧਰਤੀ 'ਤੇ ਇਕ ਅਜਿਹਾ ਅਸਥਾਨ ਹੈ, ਜਿਥੇ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੁਆਮੀ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਜੀ ਗਿਲਪੱਤੀ ਬਠਿੰਡਾ ਤੋਂ ਪੂਜਣਯੋਗ ਸੰਤ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਨੂੰ ਜੋ ਬਚਪਨ ਵਿਚ ਸਨ, ਲੈ ਕੇ ਆਏ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਇਥੇ ਆਗਮਨ ਨਾਲ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਪ੍ਰਮ-ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਭਗਤੀ, ਭਜਨ ਸਿਮਰਨ ਸਦਕਾ ਹੀ ਅੱਜ ਇਸ ਪਾਵਨ ਅਸਥਾਨ ਦਾ ਨਾਮ ਪੂਰੇ ਸੰਸਾਰ ਵਿਚ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਹੈ। ਡੇਰਾ ਸੱਚਖੰਡ ਬੱਲਾਂ ਦਾ ਮੁੱਢ ਸੰਤ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਦੇ ਸਾਸ ਗਰਾਸ, ਭਜਨ ਸਿਮਰਨ ਤੇ ਭਗਤੀ ਤੋਂ ਬੱਝਿਆ। ਪਰਮ-ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਵਿੱਧੀ ਪੂਰਵਕ ਸੰਤ ਸਤਿਗੁਰਾਂ ਦੇ ਦੱਸੇ ਹੋਏ ਤਰੀਕੇ, ਦਰਸਾਏ ਹੋਏ ਮਾਰਗ ਅਨੁਸਾਰ ਨਾਮ ਦੀ ਕਮਾਈ ਕਰਨ ਨਾਲ ਹੁੰਦੀ ਹੈ, ਨਾਮ ਦੀ ਕਮਾਈ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਸੰਤ ਸਤਿਗੁਰੂ, ਗੁਰੂ ਜਿਥੋਂ ਤੱਕ ਇਤਿਹਾਸ ਹਾਮੀ ਭਰਦਾ ਹੈ, ਜਦੋਂ ਤੱਕ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸ ਮੌਜੂਦ ਹੈ, ਉਂਗਲਾ 'ਤੇ ਗਿਣੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਸੰਤ ਸਤਿਗੁਰਾਂ ਦੀ ਮੌਜੂਦਗੀ ਕੋਈ ਬੁੱਧੀਮਾਨ, ਗਿਆਨੀ ਤੇ ਅਧਿਆਤਮਕ ਗਿਆਨ ਰੱਖਣ ਵਾਲਾ ਹੀ ਸਮਝ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਡੇਰਾ ਸੱਚਖੰਡ ਬੱਲਾਂ ਦੇ ਸੰਤ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੁਆਮੀ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਜੀ, ਸੰਤ ਸਤਿਗੁਰੂ ਹਰੀ ਦਾਸ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ, ਸਤਿਗੁਰੂ ਗਰੀਬ ਦਾਸ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਅਤੇ ਮੌਜੂਦਾ ਗੱਦੀ ਨਸ਼ੀਨ ਸਤਿਗੁਰੂ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਅਤੇ ਕੌਮ ਦੇ ਸ਼ਹੀਦ ਸੰਤ ਰਾਮਾਨੰਦ ਜੀ ਉਸੇ ਹੀ ਪਰਮ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਨਾਮ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਕਰਕੇ ਵਿਧੀ ਪੂਰਵਕ ਭਜਨ ਸਿਮਰਨ ਕਰਕੇ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਰੂਪ ਹੋਏ ਹਨ। ਜੋ ਮਾਰਗ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦਾ ਸੀ, ਸਤਿਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਤੇ ਹੋਰ ਪਾਤਸ਼ਾਹੀਆਂ ਦਾ ਸੀ। ਸਤਿਗੁਰੂ ਕਬੀਰ ਜੀ ਦਾ ਸੀ, ਸਤਿਗੁਰੂ ਸਧਨਾ ਜੀ, ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੈਨ ਜੀ, ਸਤਿਗੁਰੂ ਧੰਨਾ ਜੀ, ਮੀਰਾ ਜੀ, ਬਾਬਾ ਫਰੀਦ ਜੀ, ਮਹਾਤਮਾ ਬੁੱਧ ਜੀ ਇਤਿਆਦਿ ਦਾ ਸੀ, ਉਸੇ ਮਾਰਗ 'ਤੇ ਚਲਣ ਵਾਲੇ ਸਾਡੇ ਸੰਤ ਸਤਿਗੁਰੂ ਹਨ। ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਦੇ ਕਥਨ ਅਨੁਸਾਰ-

ਸਤਯੁਗ ਸਤ, ਤ੍ਰੇਤਾ ਜਗੀ, ਦੁਆਪਰ ਪੂਜਾ ਚਾਰ,
ਤੀਨੌ ਯੁਗ ਤੀਨੌ ਦਿੜੇ, ਕਲ ਕੇਵਲ ਨਾਮ ਅਧਾਰ।

ਕਲਯੁੱਗ 'ਚ ਸਿਰਫ ਨਾਮ ਜਪਣ ਵਾਲਾ ਇਨਸਾਨ ਹੀ ਪਰਮ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਪਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਜਿਸ ਨਾਮ ਦੀ ਵਰਖਾ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਨੇ ਕੀਤੀ, ਲੱਖਾਂ ਦੁਨੀਆਂ ਤਾਰੀ, ਸੱਚਖੰਡ ਦੇ ਵਾਸੀ ਬਣਾਏ, ਉਸ ਨਾਮ ਦਾ ਪ੍ਰਚਾਰ ਤੇ ਪ੍ਰਸਾਰ ਡੇਰਾ ਸੱਚਖੰਡ ਬੱਲਾਂ ਤੋਂ ਪ੍ਰਵਾਹ ਚਲ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਸ ਡੇਰੇ 'ਤੇ ਜਗਤਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ, ਸਤਿਗੁਰੂ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਜੀ, ਸਤਿਗੁਰੂ ਹਰੀ ਦਾਸ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ, ਸਤਿਗੁਰੂ ਗਰੀਬ ਦਾਸ ਜੀ ਦੀ ਐਸੀ ਅਪਾਰ ਕ੍ਰਿਪਾ ਹੈ ਜੋ ਪ੍ਰੇਮ, ਸ਼ਰਧਾ ਅਤੇ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਨਾਲ ਦੱਸੇ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਨਾਮ-ਦਾਨ ਲੈ ਕੇ ਭਜਨ, ਸਿਮਰਨ ਕਰੇਗਾ, ਭਾਵ ਸਾਗਰ ਤੋਂ ਪਾਰ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਸੱਚਖੰਡ ਵਾਸੀ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਪਰਮ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਪਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦਾ ਦਰ ਹੈ। ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੁਆਮੀ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਜੀ ਨੇ ਭਜਨ, ਸਿਮਰਨ ਸਦਕਾ ਇਥੇ ਪ੍ਰਤੱਖ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਪਰਮ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਵਿਧੀ ਵਿਧਾਨ ਅਨੁਸਾਰ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਆਪ ਕਿਸੇ ਨਾ ਕਿਸੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਇਸ ਧਰਤੀ 'ਤੇ ਬਿਰਾਜਮਾਨ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਇਕ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਰੂਪਾਂ ਵਿਚ ਵੀ ਮੌਜੂਦ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਅੱਜ ਦੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੁਆਮੀ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਜੀ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਨਾਮ ਜਪਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਸਭ ਡੇਰਾ ਸੱਚਖੰਡ ਬੱਲਾਂ ਤੋਂ ਹਰ ਸੁੱਖ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰ ਚੁੱਕੇ ਹਨ। ਪਰਮ ਪਿਤਾ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਦੇ ਦੱਸੇ ਸੰਤ ਸਤਿਗੁਰਾਂ ਦੇ ਮਾਰਗ ਅਨੁਸਾਰ ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਕਰ ਚੁੱਕੇ ਹਨ। ਦਲਿਤ, ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਕੌਮ ਦੇ ਮੇਰੇ ਵੀਰਾਂ-ਭੈਣਾਂ ਨੂੰ ਮੇਰੇ ਵਲੋਂ ਇਹ ਪੈਗਾਮ ਹੈ ਕਿ ਵੱਧ ਤੋਂ ਵੱਧ ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਡੇਰਾ ਸੱਚਖੰਡ ਬੱਲਾਂ ਵਲੋਂ ਚਲ ਰਹੇ ਨਾਮ-ਦਾਨ ਦੇ ਪ੍ਰਵਾਹ ਦਾ ਫਾਇਦਾ ਉਠਾਉਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

—ਦਵਿੰਦਰ ਸਿੰਘ, ਸਰਾਭਾ ਨਗਰ

ਦਲਿਤਾਂ ਦੇ ਰਹਿਬਰ, ਰੂਹਾਨੀਅਤ ਦੇ ਪੁੰਜ

ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਬਾਬਾ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ ਬਰਸੀ ਸਮਾਗਮ 'ਤੇ

ਸ਼ਰਧਾ ਅਤੇ ਸਤਿਕਾਰ ਭਰੀ ਸ਼ਰਧਾਂਜਲੀ ਭੇਟ ਕਰਦੇ ਹਾਂ

ਸੇਠ ਸਤਪਾਲ ਮੱਲ ਅਤੇ ਪਰਿਵਾਰ ਬੂਟਾਂ ਮੰਡੀ (ਜਲੰਧਰ)

ਵਲੋਂ—

Mr. H.R. Hira, Amman (JORDAN)

ਮੁਹੱਲਾ ਸਲਵਾੜਾ, ਹੁਸ਼ਿਆਰਪੁਰ ਵਿਖੇ ਜਗਤਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਅਤੇ ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਧਰਮ ਨੂੰ ਸਮਰਪਿਤ ਪਹਿਲਾ ਸੰਤ ਸੰਮੇਲਨ ਸ਼ਰਧਾ ਸਹਿਤ ਸੰਪੰਨ

ਮਿਤੀ 19-9-2011, (ਕੁਲਵੰਤ ਕਜਲਾ)—ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜਾਗ੍ਰਤੀ ਨੌਜਵਾਨ ਸਭਾ ਅਤੇ ਇਲਾਕੇ ਦੀ ਸਮੂਹ ਸੰਗਤ ਵਲੋਂ ਜਗਤਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਨੂੰ ਅਤੇ ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਧਰਮ ਨੂੰ ਸਮਰਪਿਤ ਪਹਿਲਾ ਮਹਾਨ ਸੰਤ ਸੰਮੇਲਨ ਸ੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੀ ਪਾਵਨ ਸਰਪ੍ਰਸਤੀ ਅਤੇ ਸੰਤ ਸੁਰਿੰਦਰ ਦਾਸ ਬਾਵਾ ਜੀ ਦੀ ਦੇਖ-ਰੇਖ ਹੇਠ ਸ਼ਰਧਾ ਸਹਿਤ ਕਰਵਾਇਆ ਗਿਆ। ਜਿਸ ਦੇ ਸਬੰਧ ਵਿਚ ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ ਜਾਪ ਕਰਵਾਏ ਗਏ ਤੇ ਆਰਤੀ ਦਾ ਗਾਇਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਸਮੁੱਚੀ ਮਾਨਵਤਾ ਦੇ ਭਲੇ ਲਈ ਅਰਦਾਸ ਬੇਨਤੀ ਕੀਤੀ ਗਈ ਉਪਰੰਤ ਦੀਵਾਨ ਕੀਰਤਨ ਸਜਾਏ ਗਏ। ਜਿਸ ਵਿਚ ਗਿ. ਮਿਹਰ ਸਿੰਘ ਜੀ, ਗਿ. ਬੂਟਾ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਦਾ ਸ਼ਬਦ 'ਬੇਗਮਪੁਰਾ ਸਹਰ ਕੋ ਨਾਉ' ਅਤੇ 'ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਸੁਆਮੀ ਜੀ ਕਰ ਪਰਉਪਕਾਰ ਗਏ' ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਸਰਵਣ ਕਰਾਕੇ ਨਿਹਾਲ ਕੀਤਾ। ਸ੍ਰੀ ਜਸਵੰਤ ਰਾਏ ਜੀ ਨੇ ਸਤਿਗੁਰ ਦੀ ਮਹਿਮਾ ਵਿਚ ਕਵਿਤਾ ਸੁਣਾਈ। ਉਪਰੰਤ ਕੁਠਿਆਲ ਭਜਨ ਮੰਡਲੀ ਸਲਵਾੜਾ ਨੇ ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ਬਦ ਸਰਵਣ ਕਰਵਾਏ। ਸ੍ਰੀ ਮੋਹਣ ਲਾਲ ਭਟੋਆ ਜੀ ਨੇ ਵੀ ਮਹਿਮਾ ਸਰਵਣ ਕਰਵਾਈ। ਉਪਰੰਤ ਸ੍ਰੀ ਤਰਸੇਮ ਦੀਵਾਨਾ ਜੀ ਨੇ 'ਮਾਤਾ ਕਲਸਾਂ ਨੂੰ ਲੋਕੀਂ ਦੇਣ ਵਧਾਈਆਂ' ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਗੁਰੂ ਉਪਮਾ ਸਰਵਣ ਕਰਵਾਈ। ਇਸਤੋਂ ਉਪਰੰਤ ਸ੍ਰੀ ਪੰਮਾ ਸੁੰਨੜ ਜੀ ਨੇ 'ਹਰਿ ਦਾ ਨਿਸ਼ਾਨ ਸਾਡਾ ਪਿਆਰਾ ਸੰਗਤੇ', 'ਦੁਨੀਆਂ ਕਰੂੰਗੀ ਰਵਿਦਾਸੀਆਂ ਨੂੰ ਯਾਦ' ਆਦਿ ਰਚਨਾਵਾਂ ਸਰਵਣ ਕਰਵਾਈਆਂ। ਇਸ ਤੋਂ ਉਪਰੰਤ ਸੰਤ ਮੋਹਣ ਦਾਸ ਜੀ ਨੂਰਪੁਰ ਵਾਲਿਆਂ ਨੇ 'ਸਤਿਗੁਰੂ ਮੇਰੇ ਪੂਰੇ ਸਤਿਗੁਰ' ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਮਹਿਮਾ ਸਰਵਣ ਕਰਵਾਈ। ਇਸ ਤੋਂ ਉਪਰੰਤ ਸ੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ ਸਹਿਯੋਗੀ ਸੰਤ ਸੁਰਿੰਦਰ ਦਾਸ ਬਾਵਾ ਜੀ ਨੇ ਆਪਣੇ ਵਡਮੁੱਲੇ ਅਤੇ ਕ੍ਰਾਂਤੀਕਾਰੀ ਪ੍ਰਵਚਨਾਂ ਰਾਹੀਂ ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਜਗਤਗੁਰੂ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਨਾਲ ਜੋੜਕੇ ਉਹਨਾਂ ਵਲੋਂ ਉਚਾਰਨ ਕੀਤੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਦੇ ਪਾਵਨ ਸ਼ਬਦ 'ਜਿਹ ਕੁਲ ਸਾਧ ਬੈਸਨੋ ਹੋਇ, ਵਰਨ ਅਵਰਨ ਰੰਕੁ ਨਹੀਂ ਈਸਰ ਬਿਮਲ ਬਾਸ ਜਾਨੀਐ ਜੱਗ ਸੋਇ' ਅਤੇ 'ਸਾਧ ਕਾ ਨਿੰਦਕ ਕੈਸੇ ਤਰੈ, ਸਰਪਰ ਜਾਨਹੁ ਨਰਕ ਹੀ ਪਰੈ' ਇਹਨਾਂ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦਾ ਵਿਸਥਾਰ ਰੂਪ ਵਿਚ ਵਿਖਿਆਨ ਕਰਕੇ ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਵਡਮੁੱਲਾ ਗਿਆਨ ਬਖਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤਾ। ਉਹਨਾਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਅੱਜ ਪੂਰੇ ਵਿਸ਼ਵ ਵਿਚ ਜਗਤਗੁਰੂ ਸਤਿਗੁਰ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਸਦਕਾ ਸਮੁੱਚੀ ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਕੌਮ ਅੰਦਰ ਖੁਸ਼ੀ ਦੀ ਲਹਿਰ ਹੈ ਅਤੇ 'ਹਰਿ ਦੇ ਕੌਮੀ ਨਿਸ਼ਾਨ ਝੂਲ ਰਹੇ ਹਨ। ਜਗਤਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ ਜੈਕਾਰੇ ਗੂੰਜ ਰਹੇ ਹਨ। ਅੱਜ ਅਸੀਂ ਇੱਜ਼ਤ ਅਣਖ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਬਤੀਤ ਕਰ ਰਹੇ ਹਾਂ, ਇਹ ਆਪਣੇ ਰਹਿਬਰਾਂ ਦੀਆਂ ਕੁਰਬਾਨੀਆਂ ਸਦਕਾ ਹੀ ਹੈ। ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ ਸ੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਵਲੋਂ ਕੀਤੇ ਕੰਮ 'ਤੇ ਪਰਉਪਕਾਰਾਂ ਬਾਰੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਸਦੀਆਂ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ ਜਨਮ ਅਸਥਾਨ ਦੀ ਦਿੱਬ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਰਾਹੀਂ ਖੋਜ ਕਰਕੇ ਸੰਤ ਹਰੀ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਪਾਸੋਂ ਮੰਦਰ ਦੀ ਨੀਂਹ ਰਖਵਾਈ ਅਤੇ ਉਸਾਰੀ ਦੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਜ਼ਿੰਮੇਵਾਰੀਆਂ ਸੰਤ ਗਰੀਬ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੇ ਨਿਭਾਈਆਂ। ਅੱਜ ਆਪਣੇ ਗੁਰੂਆਂ ਦੇ ਹੁਕਮਾਂ ਨੂੰ ਸ੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਪ੍ਰਵਾਨ ਚੜ੍ਹਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਧਰਮ ਦੇ ਮਹਾਨ ਅਮਰ ਸ਼ਹੀਦ ਸੰਤ ਰਾਮਾਨੰਦ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੇ ਆਪਣਾ ਸਾਰਾ ਜੀਵਨ ਜਗਤਗੁਰੂ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ ਮਿਸ਼ਨ ਦਾ ਪ੍ਰਚਾਰ ਅਤੇ ਪ੍ਰਸਾਰ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਸ਼ਹਾਦਤ ਦਾ ਜਾਮ ਪੀਂਦੇ ਹੋਏ ਸਮੁੱਚੀ ਕੌਮ ਅੰਦਰ ਅਣਖ ਦਾ ਲਾਵਾ ਭਰ ਦਿੱਤਾ ਤੇ ਸਮੁੱਚੀ ਕੌਮ ਨੂੰ ਇਕ ਪਲੇਟਫਾਰਮ 'ਤੇ ਇਕੱਠਾ ਕਰ ਗਏ ਤੇ ਅਮਰ ਸ਼ਹੀਦ ਸ੍ਰੀ ਵਿਜੈ ਕੁਮਾਰ ਜੀ, ਸ਼ਹੀਦ ਤੇਲੂ ਰਾਮ ਜੀ, ਸ਼ਹੀਦ ਰਜਿੰਦਰ ਕੁਮਾਰ ਜੀ ਤੇ ਸ਼ਹੀਦ ਸ੍ਰੀ ਬਲਕਾਰ ਸਿੰਘ ਜੀ, ਇਹਨਾਂ ਅਮਰ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਨੇ ਵੀ ਆਪਣੇ ਰਹਿਬਰਾਂ ਦੇ ਮਿਸ਼ਨ ਲਈ ਕੁਰਬਾਨੀ ਦੇ ਕੇ ਆਪਣਾ ਨਾਮੁ ਹਮੇਸ਼ਾ ਲਈ ਅਮਰ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਤੱਕ ਸੂਰਜ ਚੰਦ ਸਿਤਾਰੇ ਰਹਿਣਗੇ ਇਹਨਾਂ ਦਾ ਨਾਮ ਹਮੇਸ਼ਾ ਲਈ ਚਮਕਦਾ ਰਹੇਗਾ। ਉਹਨਾਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਅੱਜ ਸਾਡਾ ਆਪਣਾ ਧਰਮ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਫ਼ਖਰ ਨਾਲ ਕਹਿ ਸਕਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਅਸੀਂ ਰਵਿਦਾਸੀਏ ਹਾਂ। ਸਾਨੂੰ ਆਪਣੇ ਧਰਮ ਦਾ ਪ੍ਰਚਾਰ ਅਤੇ ਪ੍ਰਸਾਰ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਤੇ ਬਾਕੀ ਸਾਰੇ ਧਰਮਾਂ ਦਾ ਸਤਿਕਾਰ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ, ਕਿਉਂਕਿ ਸਾਰੇ ਹੀ ਧਰਮ ਸਮੁੱਚੀ ਮਾਨਵਤਾ ਨੂੰ ਸੱਚ ਦਾ ਰਾਹ ਦਿਖਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਉਹਨਾਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਾਨੂੰ ਆਪਣੇ ਰਹਿਬਰਾਂ ਦੀਆਂ ਸਿੱਖਿਆਵਾਂ 'ਤੇ ਚਲਕੇ ਆਪਣਾ ਜੀਵਨ ਸਫਲ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਉਪਰੰਤ ਸੰਤ ਬੀਬੀ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨਾ ਦੇਵੀ ਜੀ ਬੋਪਾਰਾਏ ਕਲਾਂ ਵਾਲਿਆਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਪ੍ਰਵਚਨ ਸਰਵਣ ਕਰਵਾਏ। ਉਹਨਾਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਾਨੂੰ ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ ਆਸ਼ੀਰਵਾਦ ਨਾਲ ਹੀ ਆਪਣੇ ਸਾਰੇ ਕਾਰਜ ਕਰਨੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ ਤੇ ਉਸ ਦਾ ਪ੍ਰਚਾਰ ਤੇ ਪ੍ਰਸਾਰ ਪੂਰੇ ਵਿਸ਼ਵ ਵਿਚ ਜਨ-ਜਨ ਤਕ ਪਹੁੰਚਾਉਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਹੀ ਅਸੀਂ ਆਪਣੇ ਰਹਿਬਰਾਂ ਦਾ ਕਰਜ਼ਾ ਉਤਾਰ ਸਕਦੇ ਹਾਂ। ਉਪਰੰਤ ਸੰਤ ਲੇਖ ਰਾਜ ਜੀ ਨੂਰਪੁਰ ਵਾਲਿਆਂ ਨੇ ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਪ੍ਰਵਚਨਾਂ ਰਾਹੀਂ ਰਹਿਬਰਾਂ ਦੇ ਮਿਸ਼ਨ ਨਾਲ ਜੋੜਕੇ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਪਰਉਪਕਾਰਾਂ ਤੋਂ ਜਾਣੂ ਕਰਵਾ ਕੇ ਨਿਹਾਲ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਤੋਂ ਉਪਰੰਤ ਦਾਸ ਕੁਲਵੰਤ ਕਜਲਾ ਨੇ ਜਗਤਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਅਤੇ ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਧਰਮ ਦੇ ਸਬੰਧ ਵਿਚ ਸੰਤ ਸੁਰਿੰਦਰ ਦਾਸ ਬਾਵਾ ਜੀ ਵਲੋਂ ਬਿਆਨ ਕੀਤੀ 'ਮਹਿਮਾ ਜਗਤਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦੀ ਹੈ ਕ੍ਰਿਪਾ ਹੋਈ ਕੌਮ ਸੁੱਤੀ ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਹੁਣ ਉੱਠ ਖਲੋਈ' ਰਚਨਾ ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਸਰਵਣ ਕਰਵਾਈ। ਇਸ ਤੋਂ ਉਪਰੰਤ ਸੰਤ ਮਥੁਰਾ ਦਾਸ ਜੀ (ਸਲਵਾੜਾ) ਵਾਲਿਆਂ ਨੇ ਆਏ ਸੰਤ-ਮਹਾਂਪੁਰਸ਼ਾਂ ਦਾ ਤੇ ਆਈਆਂ ਸਮੂਹ ਸੰਗਤਾਂ ਦਾ ਤਹਿ. ਦਿਲੋਂ ਧੰਨਵਾਦ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਸਮਾਗਮ ਨੂੰ ਸਫਲ ਬਣਾਉਣ ਲਈ ਬੇਗਮਪੁਰਾ ਟਾਇਗਰ ਫੋਰਸ ਪੰਜਾਬ ਨੇ ਅਹਿਮ ਸੇਵਾ ਨਿਭਾਈ। ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਵਿਚ ਸੰਗਤਾਂ ਨੇ ਗੁਰੂ ਉਪਮਾ ਸਰਵਣ ਕਰਕੇ ਆਪਣਾ ਜੀਵਨ ਸਫਲ ਕੀਤਾ। ਪ੍ਰਬੰਧਕਾਂ ਵਲੋਂ ਆਏ ਸੰਤ-ਮਹਾਂਪੁਰਸ਼ਾਂ ਦਾ ਅਤੇ ਸਮਾਗਮ ਵਿਚ ਵਡਮੁੱਲੀਆਂ ਸੇਵਾਵਾਂ ਨਿਭਾਉਣ ਵਾਲੀਆਂ ਸੰਗਤਾਂ ਦਾ ਮਾਣ-ਸਨਮਾਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਇਸ ਸਮਾਗਮ ਵਿਚ ਸੰਗਤਾਂ ਨੇ ਜੋ ਮਾਇਆ ਸ੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੂੰ ਨਮਸਕਾਰ ਕੀਤੀ ਸੀ, ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੇ ਸਾਰੀ ਮਾਇਆ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਕਮੇਟੀ ਨੂੰ ਅਸ਼ੀਰਵਾਦ ਵਜੋਂ ਭੇਟ ਕਰ ਦਿੱਤੀ। ਇਸ ਸਮਾਗਮ ਵਿਚ ਸਟੇਜ ਸਕੱਤਰ ਦੀ ਸੇਵਾ ਸ੍ਰੀ ਨਿਰੰਜਣ ਚੀਮਾ ਜੀ ਨੇ ਬੜੇ ਹੀ ਸੁਚੱਜੇ ਢੰਗ ਨਾਲ ਨਿਭਾਈ। ਸਮਾਗਮ ਦੀ ਸਮਾਪਤੀ ਉਪਰੰਤ ਗੁਰੂ ਕਾ ਲੰਗਰ ਅਤੁੱਟ ਵਰਤਾਇਆ ਗਿਆ।

ਅੱਸੂ ਦੀ ਸੰਗਰਾਂਦ ਦਾ ਪਵਿੱਤਰ ਦਿਹਾੜਾ ਡੇਰਾ ਸੱਚਖੰਡ ਬੱਲਾਂ ਵਿਖੇ ਸ਼ਰਧਾ ਸਹਿਤ ਮਨਾਇਆ

ਮਿਤੀ 17-9-2011—ਡੇਰਾ ਸੱਚਖੰਡ ਬੱਲਾਂ ਜਲੰਧਰ ਵਿਖੇ ਅੱਸੂ ਦੀ ਸੰਗਰਾਂਦ ਦਾ ਪਵਿੱਤਰ ਦਿਹਾੜਾ ਸ੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੀ ਪਾਵਨ ਸਰਪ੍ਰਸਤੀ ਅਤੇ ਸੰਤ ਸੁਰਿੰਦਰ ਦਾਸ ਬਾਵਾ ਜੀ ਦੀ ਦੇਖ-ਰੇਖ ਹੇਠ ਸ਼ਰਧਾ ਸਹਿਤ ਮਨਾਇਆ ਗਿਆ। ਜਿਸ ਦੇ ਸਬੰਧ ਵਿਚ ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਸਤਿਗੁਰ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ ਜਾਪ ਕਰਵਾਏ ਗਏ ਆਰਤੀ ਦਾ ਗਾਇਨ ਗਿ. ਮਿਹਰ ਸਿੰਘ ਜੀ ਅਤੇ ਸਾਥੀਆਂ ਨੇ ਕੀਤਾ। ਸਮੁੱਚੀ ਮਾਨਵਤਾ ਦੇ ਭਲੇ ਲਈ ਅਰਦਾਸ ਬੇਨਤੀ ਕੀਤੀ ਗਈ, ਉਪਰੰਤ ਦੀਵਾਨ ਕੀਰਤਨ ਸਜਾਏ ਗਏ। ਜਿਸ ਵਿਚ ਗਿ. ਉਂਕਾਰ ਸਿੰਘ ਜੀ ਗੜ੍ਹਪਧਾਣੇ ਵਾਲਿਆਂ ਨੇ 'ਦਰਸ਼ਨ ਦੀਜੈ ਰਾਮ', ਗਿ. ਤਜਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ 'ਮੋਹਿ ਨਾ ਵਿਸਾਰਹੁ ਮੈਂ ਜਨ ਤੇਰਾ', ਭਾਈ ਸਤੀਸ਼ ਜੀ ਕੈਂਟ ਵਾਲਿਆਂ ਨੇ 'ਸਗਲ ਭਵਨ ਕੇ ਨਾਇਕਾ ਇਕ ਛਿਨੁ ਦਰਸ ਦਿਖਾਇ ਜੀ', ਭਾਈ ਹਰਪਾਲ ਸਿੰਘ ਵਿਰਦੀ ਜੀ ਨੇ 'ਸੰਤ ਤੁਝੀ ਤਨ ਸੰਗਤ ਪ੍ਰਾਨ', 'ਰਵਿਦਾਸ ਜਹ ਗ੍ਰੰਥ ਹੈ ਪੜੈ ਸੁਨੈ ਮਨ ਲਾਇ' ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਦੇ ਸ਼ਬਦ ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਸਰਵਣ ਕਰਾਕੇ ਨਿਹਾਲ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਤੋਂ ਉਪਰੰਤ ਸ੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੇ ਅੱਸੂ ਦਾ ਮਹੀਨਾ ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਸਰਵਣ ਕਰਵਾਇਆ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਸਹਿਯੋਗੀ ਸਤਿਕਾਰਯੋਗ ਸੰਤ ਸੁਰਿੰਦਰ ਦਾਸ ਬਾਵਾ ਜੀ ਨੇ ਆਪਣੇ ਵੱਡਮੁੱਲੇ ਪ੍ਰਵਚਨਾਂ ਰਾਹੀਂ ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਅੱਸੂ ਦੇ ਮਹੀਨੇ ਦਾ ਮਹਾਤਵ ਸਮਝਾਇਆ। ਉਹਨਾਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਜਗਤਗੁਰੂ ਸਤਿਗੁਰ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਦੇ ਬਾਰਾਂ ਮਾਸ ਉਪਦੇਸ਼ ਦਾ ਉਚਾਰਣ ਕਰਕੇ ਸਮੁੱਚੀ ਮਾਨਵਤਾ ਨੂੰ ਵੱਡਮੁੱਲਾ ਗਿਆਨ ਬਖਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਉਹਨਾਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਾਨੂੰ ਆਪਣੇ ਰਹਿਬਰਾਂ ਵਲੋਂ ਦੱਸੇ ਮਾਰਗ 'ਤੇ ਚਲ ਕੇ ਆਪਣਾ ਜੀਵਨ ਸਫਲ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਤੇ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਸੁਪਨਿਆਂ ਨੂੰ ਸਕਾਰ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ, ਤਾਂ ਹੀ ਅਸੀਂ ਆਪਣੇ ਰਹਿਬਰਾਂ ਦੇ ਸੱਚੇ ਪੈਰੋਕਾਰ ਅਖਵਾਵਾਂਗੇ। ਇਸ ਤੋਂ ਉਪਰੰਤ ਸੰਤ ਮੋਹਣ ਦਾਸ ਜੀ ਨੇ 'ਦੁਆਰ ਦੱਸਵੇਂ ਦਾ ਖੋਲ੍ਹਦੇ ਨੇ ਤਾਲਾ ਹੈ ਕੁੰਜੀ ਹੱਥ ਸਾਧੂਆਂ ਦੇ' ਸੰਤਾਂ ਦੀ ਮਹਿਮਾ ਸਰਵਣ ਕਰਵਾਈ। ਉਪਰੰਤ ਦਾਸ ਕੁਲਵੰਤ ਕਜਲਾ ਨੇ ਸਤਿਗੁਰਾਂ ਦੀ ਮਹਿਮਾ ਵਿਚ ਸੰਤ ਸੁਰਿੰਦਰ ਦਾਸ ਬਾਵਾ ਜੀ ਦੀ ਲਿਖੀ ਰਚਨਾ 'ਜਗਤ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਦੀ ਹੈ ਕ੍ਰਿਪਾ ਹੋਈ, ਕੌਮ ਸੁੱਤੀ ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਹੁਣ ਉੱਠ ਖਲੋਈ' ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਰਚਨਾ ਸਰਵਣ ਕਰਵਾਈ। ਉਪਰੰਤ ਸ੍ਰੀ ਜੋਗਿੰਦਰ ਦੁਖੀਆ ਜੀ ਨੇ 'ਮਿਸ਼ਨ ਹੈ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਦਾ ਸਾਨੂੰ ਮੁੜ-ਮੁੜ ਵਾਜਾਂ ਮਾਰਦਾ' ਰਚਨਾ ਸਰਵਣ ਕਰਵਾਈ। ਉਪਰੰਤ ਸ੍ਰੀ ਬਲਵਿੰਦਰ ਬਿੱਟੂ ਜੀ ਨੇ ਸੰਤਾਂ ਦੇ ਬੋਲ, 'ਸਾਨੂੰ ਜਿੰਨੇ ਵੀ ਅੱਜ ਹੱਕ ਮਿਲੇ ਸਭ ਦਿੱਤੇ ਕਾਂਸ਼ੀ ਵਾਲੇ ਨੇ', 'ਸਤਿਗੁਰਾਂ ਦੀ ਮਹਿਮਾ ਸਰਵਣ ਕਰਵਾਈ।' ਉਪਰੰਤ ਸ੍ਰੀ ਕਾਬਲ ਰਾਮ ਟਾਂਡੀ ਵਾਲਿਆਂ ਨੇ 'ਮੈਨੂੰ ਨੌਕਰ ਰੱਖ ਲਉ ਸਤਿਗੁਰ ਜੀ ਆਪਣੇ ਦਰਬਾਰ ਦਾ' ਸਤਿਗੁਰਾਂ ਦੀ ਮਹਿਮਾ ਸਰਵਣ ਕਰਵਾਈ। ਉਪਰੰਤ ਮਾਤਾ ਕਲਸਾਂ ਭਜਨ ਮੰਡਲੀ ਬੂਟਾਂ ਮੰਡੀ ਵਾਲੀਆਂ ਬੀਬੀਆਂ ਨੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਦਾ ਸ਼ਬਦ 'ਅਬ ਕੈਸੇ ਛੂਟੇ ਨਾਮ ਰੱਟ ਲਾਗੀ' ਸਰਵਣ ਕਰਵਾਇਆ। ਇਸ ਮੌਕੇ 'ਤੇ ਸੰਤ ਲੇਖ ਰਾਜ ਜੀ ਨੂਰਪੁਰ ਵਾਲਿਆਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਪ੍ਰਵਚਨਾਂ ਰਾਹੀਂ ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਨਿਹਾਲ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਸਮਾਗਮ ਵਿਚ ਸੰਤ ਫਕੀਰ ਦਾਸ ਤੰਦਵਾਲੀ ਹਰਿਆਣਾ ਵਾਲਿਆਂ ਤੇ ਸੰਤ ਪਤਰਮ ਦਾਸ ਜੀ ਨੇ ਵੀ ਸਮਾਗਮ ਵਿਚ ਹਾਜ਼ਰੀ ਭਰੀ। ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਵਿਚ ਸੰਗਤਾਂ ਨੇ ਗੁਰੂ ਜਸ ਸਰਵਣ ਕਰਕੇ ਆਪਣਾ ਜੀਵਨ ਸਫਲ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਸਮਾਗਮ ਵਿਚ ਸਟੇਜ ਸਕੱਤਰ ਦੀ ਸੇਵਾ ਪ੍ਰਧਾਨ ਗੁਰਦਿਆਲ ਸਿੰਘ ਨੇ ਬਾਖੂਬੀ ਨਿਭਾਈ। ਉਪਰੰਤ ਗੁਰੂ ਕਾ ਲੰਗਰ ਛਕਾਇਆ ਗਿਆ।

ਸੰਗਰਾਂਦ ਦੇ ਪਵਿੱਤਰ ਦਿਹਾੜੇ 'ਤੇ ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਦਰਸ਼ਨ ਦਿੰਦੇ ਹੋਏ ਸ੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਅਤੇ ਹੋਰ ਸੰਤ ਮਹਾਂਪੁਰਸ਼, ਸੰਤ ਸੁਰਿੰਦਰ ਦਾਸ ਬਾਵਾ ਜੀ ਪ੍ਰਵਚਨ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਅਤੇ ਸੰਗਤਾਂ ਦਾ ਭਾਰੀ ਇਕੱਠ।

ਸੰਤ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਜੀ

—ਮਹਿੰਦਰ ਸੰਧੂ, ਮਹੇੜੂ

ਡੇਰਾ ਸੱਚਖੰਡ ਬੱਲਾਂ ਦੀਆਂ ਹੋਣ ਦੁਨੀਆਂ 'ਤੇ ਗੱਲਾਂ।
ਆਉਣ ਦਰ ਉੱਤੇ ਸੰਗਤਾਂ ਹਜ਼ਾਰ।
ਗੁਰੂ ਜੀ ਤੇਰੀ ਬਾਣੀ ਦਾ, ਜਿੱਥੇ ਹੁੰਦਾ ਰਹੇ ਪ੍ਰਚਾਰ।
ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਸੰਤਾਂ ਦੀ, ਮਹਿਮਾ ਬੜੀ ਨਿਆਰੀ।
ਇਸ ਜਗ੍ਹਾ 'ਤੇ ਬਹਿ ਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ, ਭਗਤੀ ਕੀਤੀ ਭਾਰੀ।
ਲੱਖਾਂ-ਕਰੋੜਾਂ ਬੰਦਿਆਂ ਦੇ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦਿੱਤੇ ਜਨਮ ਸੁਧਾਰ।
ਗੁਰੂ ਜੀ ਤੇਰੀ ਬਾਣੀ ਦਾ................।
ਸੰਤ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਸਰਵਨ ਬਣ ਕੇ, ਚੁੱਕੀ ਧਰਮ ਦੀ ਵੈਂਹਗੀ।
ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਵਿਚ ਮੁਫ਼ਤ ਲੁਟਾ ਗਏ, ਦਾਤ ਨਾਮ ਦੀ ਮਹਿੰਗੀ।
ਮਜ਼ਲੂਮਾਂ ਨੂੰ ਗਲ ਨਾਲ ਲਾ ਕੇ ਕਰਦੇ ਪਿਆਰ।
ਗੁਰੂ ਜੀ ਤੇਰੀ ਬਾਣੀ ਦਾ................।
ਸੰਤ ਮਾਰਗ 'ਤੇ ਚੱਲ ਸੰਤ ਹਰੀ ਦਾਸ, ਹਰਿ-ਹਰਿ ਨਾਮ ਧਿਆਇਆ।
ਗਰੀਬ ਦਾਸ ਨੇ ਮੇਹਰਾਂ ਕਰਕੇ, ਪਲਟ ਦਿੱਤੀ ਹੈ ਕਾਇਆ।
ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਗੁਰਗੱਦੀ ਦੇ ਬਣ ਗਏ ਸੇਵਾਦਾਰ।
ਗੁਰੂ ਜੀ ਤੇਰੀ ਬਾਣੀ ਦਾ................।
ਸੰਤ ਰਾਮਾਨੰਦ ਤੇ ਸੁਰਿੰਦਰ ਬਾਵਾ, ਬਚਨ ਅਣਮੁੱਲੇ ਕਹਿੰਦੇ।
'ਮਹਿੰਦਰ ਸੰਧੂ' ਵਰਗੇ ਤਾਂਹੀਓਂ, ਚਰਨ ਧੂੜ ਲੈ ਬਹਿੰਦੇ।
ਮਹੇੜੂ ਆਖੇ ਕਵੀਆਂ ਦਾ, ਜਿੱਥੇ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਸਤਿਕਾਰ।
ਗੁਰੂ ਜੀ ਤੇਰੀ ਬਾਣੀ ਦਾ, ਜਿਥੇ ਹੁੰਦਾ ਰਹੇ ਪ੍ਰਚਾਰ।

ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਕੌਮ ਦਾ ਆਪਣਾ ਚੈਨਲ ਕਾਂਸ਼ੀ ਟੀ.ਵੀ. ਦਾ ਸ਼ੁਭ ਉਦਘਾਟਨ ਬਰਮਿੰਘਮ ਇੰਗਲੈਂਡ ਵਿਖੇ 1 ਅਕਤੂਬਰ 2011 ਨੂੰ

—ਕੁਲਵੰਤ ਕਜਲਾ

ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਿਸ਼ਨ ਇੰਟਰਨੈਸ਼ਨਲ ਵਲੋਂ ਜਗਤਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਸਦਕਾ। ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਕੌਮ ਦਾ ਆਪਣਾ ਚੈਂਨਲ ਕਾਂਸ਼ੀ ਟੀ.ਵੀ. ਦਾ ਸ਼ੁਭ ਉਦਘਾਟਨ ਸਤਿਗੁਰਾਂ ਦੀ ਕ੍ਰਿਪਾ ਨਾਲ ਮਿਤੀ 1 ਅਕਤੂਬਰ 2011 ਦਿਨ ਸ਼ਨੀਵਾਰ ਨੂੰ ਬਰਮਿੰਘਮ ਇੰਗਲੈਂਡ ਵਿਖੇ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਜਿਸਦਾ ਪ੍ਰਸਾਰਣ ਪੂਰੇ ਵਿਸ਼ਵ-ਭਰ ਵਿਚ ਹੋਵੇਗਾ। ਜਿਸ ਵਿਚ ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਵੱਡਮੁੱਲਾ ਗਿਆਨ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਵੇਗਾ। ਕਾਂਸ਼ੀ ਟੀ.ਵੀ. ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਣ ਨਾਲ ਸਮੁੱਚੀਆਂ ਸੰਗਤਾਂ ਅੰਦਰ ਖੁਸ਼ੀ ਦੀ ਲਹਿਰ ਪਾਈ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਜਗਤਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ ਚਰਨਾਂ ਵਿਚ ਬੇਨਤੀ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਕਾਂਸ਼ੀ ਟੀ.ਵੀ. ਦਿਨ ਦੁੱਗਣੀ,ਰਾਤ ਚੌਗੁਣੀ ਤਰੱਕੀ ਕਰੇ ਤੇ ਆਪਣੇ ਰਹਿਬਰਾਂ ਦੇ ਮਿਸ਼ਨ ਦਾ ਪ੍ਰਚਾਰ ਅਤੇ ਪ੍ਰਸਾਰ ਸੰਗਤਾਂ ਤੱਕ ਘਰ-ਘਰ ਪਹੁੰਚਾਉਂਦਾ ਰਹੇ। ਕਾਂਸ਼ੀ ਟੀ.ਵੀ. ਨਾਲ ਸੰਪਰਕ ਕਰਨ ਲਈ ਆਪ ਜੀ ਨੂੰ ਸੂਚਿਤ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। —ਕਜਲਾ

Ist Floor Hallwill Industrial Estate
Hilltop Westbrom B-70 OUH
Birmingham (U.K.) England

Amrit Bani Jagatguru Ravidass Ji

BHAIRO BANI

Bin(u) dekhe upjai nahi aasaa.
Jo deesai so hoie binaasaa.
Baran saht(i) jo jaapai naam.
So jogee kewal nihkaam(u).
Parchai raam(u) ravai jo koiee.
Paaras(u) parsai dubidha na hoiee.(Rahaao).
So mun(i) man ki dubidha khaai.
Binu duaare trai lok samaaie.
Man kaa subhaao sabh koiee karai.
Kartaa hoie s(u) anbhai rahai.
Phal kaaran pholli Banrai.
Phal laagaa tab phooll(u) bilaaie.
Gianae karan karam abhyas(u).
Giaanu bhieea tah karmah nass(u).
Ghrit kaaran dadh(i) mathai sieaan.
Jeewat mukat sadaa nirbaan.
Keh(i) Ravidass param bairaag.
Ridhai raam(u) kee na japis abhaag.

Without seeing something, the yearning for it does not arise. Whatever is seen, shall pass away. He who worships God is a true Yogi free from desires. When someone utters the Name of the Lord with love, it is as if he has touched the Philosopher's stone; his sense of duality is eradicated. He who destroys the duality of his mind, alone is a silent sage. Attuned to the Creator Lord, one remains free from fear. Plants blossom forth to produce fruit. When fruit is produced the flowers wither away. For the sake of spiritual wisdom, people act and practice rituals. When spiritual wisdom wells up, then actions are left behind. Those who are jiwan-mukt, liberated while yet alive- are forever in the state of Nirvaan. O! unfortunate people why don't you meditate on the Lord with love in your heart.

Bin(u) dekhe upjai nahi aasaa.
Jo deesai so hoie binaasaa.

Without beholding the paradise the hope does not emerge and all that is visible is perishable.

Baran saht(i) jo jaapai naam.
So jogee kewal nihkaam(u).

He who repeateth His name with due regard ; that saint is a true renunciator.

Parchai raam(u) ravai jo koiee.
Paaras(u) parsai dubidha na hoiee.(Rahaao).

He who absorbs himself in uttering God's name, By his blessing he meets the Guru ; the Paras in whose company his duality does not remain (Pause)

So mun(i) man ki dubidha khaai.
Binu duaare trai lok samaaie.

He is a true Muni (sage) in whose heart duality does not remain. All the desires of three worlds, absorb into enrichment of doorless – the God.

Man kaa subhaao sabh koiee karai.
Kartaa hoie s(u) anbhai rahai.

Every body follows his natural inclinations but he, who is a creator, does with the intuition.

Phal kaaran pholli Banrai.
Phal laagaa tab phooll(u) bilaaie.

The whole vegetation blooms to produce fruit ; but, when the fruit appears the blooms go away.

Gianae karan karam abhyas(u).
Giaanu bhieea tah karmah nass(u).

To get Divine knowledge people practice recitation but once the Divine knowledge is attained religious ceremonies are felt unnecessary.

Ghrit kaaran dadh(i) mathai sieaan.
Jeewat mukat sadaa nirbaan.

To prepare butter woman uses ti churn coagulated milk ; saints churn mind to get emancipation. Complete Intuition frees from transmigration.

Keh(i) Ravidass param bairaag.
Ridhai raam(u) kee na japis abhaag.

Guru Ravidass Ji says that detachment is supreme and compulsory. O ! unfortunate man ! remain dedication in contemplations of God's name.

-Chain Ram Suman Dera Sachkhand Ballan

Ravidassia Dharam

After the martyrdom of Sant Rama Nand Ji entire Ravidassia community was agitated. They felt leaderless. For many years there was urge of Ravidassia community for a separate identity. Sant Rama Nand Ji had already pointed out in his speech delivered in the House of Commons, U.K on 28-03-2007 as below;

"Now worldwide there is strong urge among Guru Ji's followers of establishing a separate identity of their own. But the pre-requisites for any people to establish a separate identity are-(i) Common Name, (ii) Common Guru, (ii) Common Place of Pilgrimage, (iv) Common Religious Book, (v) Common Religious Symbol and a (vi) Common method of Salutation. It is for the intellectuals, thinkers and various religious institutions to debate over these issues and take a well considered decision. The earlier it is done, better it will be for the community."

Now the slogan of separate identity was on everybody's tongue. All had focused their eyes on Dera Sach Khand Bal. All the Sant Samaj was contacted by the Dera. Sant Surinder Dass Bawa Ji played a leading role in introducing separate religion and separate religious book. The Sant Samaj decided to launch Ravidassia Dharam and instal 'Amrit Bani Satguru Ravidass Maharaj Ji' as religious book. Accordingly, Ravidassia Dharam, 'Amrit Bani Satguru Ravidass Maharaj Ji' and Qaumi Nishaan HAR(i) were announced on 30th January 2010 in the presence of more than ten lakhs of devotees, from India and abroad, on the auspicious occasion of 633rd Guru Ravidass Jyanti Day at Shri Guru Ravidass Janam Asthan Mandir, Seer Govardhanpur, Varanasi.

The entire Ravidassia community in India and abroad have welcomed the announcement of Ravidassia Religion and 'Amrit Bani Satguru Ravidass Maharaj Ji'. All are thankful to the Sant Samaj for taking this historic decision. Liberty and dignity of Ravidassia *qaum* lies in Ravidassia Religion. Let us all follow our own religion in its true spirit.

-Chain Ram Suman Dera Sachkhand Ballan

"ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਧਰਮ"

ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਸਭਨਾਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰਭੂ-ਪ੍ਰੇਮ, ਭਗਤੀ ਤੇ ਸੱਚ ਦਾ ਰਸਤਾ ਦਿਖਾਉਂਦੀ ਹੈ, ਇੱਜ਼ਤ ਅਣਖ ਤੇ ਸਵੈਮਾਨ ਵਾਲਾ ਜੀਵਨ ਜਿਉਣ ਦਾ ਸਬਕ ਪੜਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਜਗਤਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਇੱਜਤ ਭਰੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਜਿਉਣ ਦਾ ਮਾਰਗ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਨੇ ਆਪਣੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਵਿਚ ਜਿਸ ਪਾਰਬ੍ਰਹਮ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ ਪ੍ਰਭੂ ਹਰਿ ਨੂੰ ਸਿਮਰਿਆ ਹੈ, ਯਾਦ ਕੀਤਾ ਹੈ, ਉਸ ਪ੍ਰਭੂ ਦੇ ਅਜਰ-ਅਮਰ ਗੁਣਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਧਾਰਨ ਕਰਨ ਦਾ ਸੱਚਾ ਉਪਦੇਸ਼ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਪ੍ਰਮਾਤਮਾ ਜੀ ਦੇ ਗੁਣਾਂ ਦਾ ਹਿਸਾਬ ਜੀਵਾਂ ਦੇ ਕਰਨ ਦੀ ਵੱਸ ਦੀ ਗੱਲ ਨਹੀਂ। ਉਸ ਪ੍ਰਭੂ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਮਹਾਨ ਗੁਣ ਸਾਨੂੰ ਸਭ ਨੂੰ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦਾ ਕਿ ਉਹ ਆਜ਼ਾਦ ਹਸਤੀ ਹੈ, ਉਸ ਦੀ ਬਣਾਈ ਸ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਵੀ ਆਜ਼ਾਦ ਹੀ ਹੈ। ਹਰਿ ਪ੍ਰਭੂ ਆਜ਼ਾਦੀ ਦਾ ਪ੍ਰਤੀਕ ਹੈ। ਜੋ ਆਪ ਕਿਸੇ ਸ਼ਕਤੀ ਦੇ ਤਹਿਤ ਗੁਲਾਮ ਨਹੀਂ ਹੈ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਬਣਾਏ ਜੀਵਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਗੁਲਾਮੀ ਭਰਿਆ ਜੀਵਨ ਜਿਉਣ ਤੋਂ ਰੋਕਦਾ ਹੈ। ਇੱਜ਼ਤ,ਮਾਣ-ਸਨਮਾਣ ਭਰਿਆ ਜੀਵਨ ਜਿਉਣ ਦਾ ਸੱਚਾ ਉਪਦੇਸ਼ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਸਾਡਾ ਸਮਾਜ ਜੋ ਸ਼ੈਤਾਨੀ ਲੋਕਾਂ ਦੁਆਰਾ ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਸਾਲ ਗੁਲਾਮੀ ਦੇ ਹਨੇਰੇ ਵਿਚ ਰੱਖਿਆ ਹੈ। ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਵਿਚ ਫ਼ਰਮਾਉਂਦੇ ਹਨ ਕਿ ਗੁਲਾਮੀ ਭਰਿਆ ਜੀਵਨ ਜਿਉਣਾ ਪਾਪ ਹੈ।

"ਪਰਾਧੀਨਤਾ ਪਾਪ ਹੈ ਜਾਨ ਲੇਹੁ ਰੇ ਮੀਤੁ
ਰਵਿਦਾਸ ਦਾਸ ਪਰਾਧੀਨ ਸੋ ਕੌਨ ਕਰੈ ਹੈ ਪ੍ਰੀਤੁ।।
ਪਰਾਧੀਨ ਕੋ ਦੀਨ ਕਯਾ ਪਰਾਧੀਨ ਬੇਦੀਨ।।
ਰਵਿਦਾਸ ਦਾਸ ਪਰਾਧੀਨ ਕੋ ਸਭ ਹੀ ਸਮਝੇ ਹੀਨ"।।

ਪਰਾਧੀਨਤਾ ਵਾਲਾ ਜੀਵਨ ਜਿਉਣਾ ਪਾਪ ਦੇ ਸਮਾਨ ਹੈ। ਇਸ ਵਾਸਤੇ ਪਰਾਧੀਨਤਾ ਤੋਂ ਮੁਕਤ ਹੋ ਕੇ ਜੀਵ ਨੂੰ ਇੱਜ਼ਤ-ਅਣਖ ਭਰਿਆ ਜੀਵਨ ਜਿਉਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਪਰਾਏ ਦੇ ਅਧੀਨ ਰਹਿ ਕੇ ਜ਼ੁਲਮ ਸਹਿਣ ਕਰਨਾ ਪਾਪ ਹੈ। ਇਸ ਗੱਲ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜਾਣ ਲਓ, ਸਮਝ ਲਓ, ਗੁਲਾਮੀ ਵਾਲਾ ਜੀਵਨ ਪਾਪ ਹੈ, ਕਿਉਂਕਿ ਗੁਲਾਮ ਨੂੰ ਸਭ ਹੀ ਦੁਰਕਾਰਦੇ ਹਨ। ਉਸ ਨਾਲ ਕੋਈ ਪ੍ਰੀਤ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ। ਜੋ ਪਰਾਏ ਦੇ ਅਧੀਨ ਹੈ ਉਸ ਦਾ ਆਪਣਾ ਕੋਈ ਧਰਮ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਜਿਸ ਦਾ ਕੋਈ ਧਰਮ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ ਉਸ ਨੂੰ ਸਭ ਹੀ ਹੀਣ ਸਮਝਦੇ ਹਨ। ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਸਮੁੱਚੀ ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਰਾਹੀਂ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਇੱਜ਼ਤ, ਸਵੈਮਾਣ ਤੇ ਅਣਖ ਭਰਿਆ ਜੀਵਨ ਬਤੀਤ ਕਰਨ ਦਾ ਮਹਾਨ ਉਪਦੇਸ਼ ਬਖ਼ਸ਼ਿਸ਼ ਅਤੇ ਗੁਲਾਮੀ ਭਰਿਆ ਜੀਵਨ ਤਿਆਗ ਦੇਣ ਦਾ ਉਪਦੇਸ਼ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਨੂੰ ਮੰਨਣ ਵਾਲਾ ਸਮਾਜ ਦਲਿਤ ਸਮਾਜ ਜੋ ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਸਾਲਾਂ ਤੋਂ ਗੁਲਾਮੀ ਭਰਿਆ ਜੀਵਨ ਬਤੀਤ ਕਰਦਾ ਆ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ, ਸਤਿਗੁਰੂ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ, ਸਤਿਗੁਰੂ ਕਬੀਰ ਜੀ, ਸਤਿਗੁਰੂ ਤ੍ਰਿਲੋਚਨ ਜੀ, ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੈਨ ਜੀ, ਸਤਿਗੁਰੂ ਸਧਨਾ ਜੀ ਅਤੇ ਡੇਰਾ ਸੱਚਖੰਡ ਬੱਲਾਂ ਦੇ ਮਹਾਨ ਮਹਾਂਪੁਰਸ਼ਾਂ ਨੇ ਜਾਗ੍ਰਿਤੀ ਪੈਦਾ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਬਾਬਾ ਸਾਹਿਬ ਡਾ. ਅੰਬੇਡਕਰ ਜੀ, ਸਾਹਿਬ ਸ੍ਰੀ ਕਾਂਸ਼ੀ ਰਾਮ ਜੀ, ਬਾਬੂ ਮੰਗੂ ਰਾਮ ਜੀ ਦੇ ਮਿਸ਼ਨ ਪ੍ਰਚਾਰ ਦੁਆਰਾ ਲਿਆਂਦੀ ਜਾਗ੍ਰਿਤੀ ਸਦਕਾ ਅੱਜ ਇਹ ਸਮਾਜ ਆਪਣੇ ਮਾਣ ਸਨਮਾਨ ਦੀ ਖਾਤਿਰ ਸਿਰ ਧੜ ਦੀ ਬਾਜ਼ੀ ਲਾਉਣ ਲਈ ਤਿਆਰ ਹੈ। ਜੋ ਅੱਜ ਤੱਕ ਕਿਸੇ ਦੂਸਰੇ ਦੇ ਧਰਮਾਂ ਵਿਚ ਆਪਣੀਆਂ ਕੁਰਬਾਨੀ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਬਣਾਉਂਦਾ ਆ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਅੱਜ ਉਹ ਸਮਾਜ ਅਮਰ ਸ਼ਹੀਦ ਸੰਤ ਰਾਮਾ ਨੰਦ ਜੀ ਦੀ ਸ਼ਹਾਦਤ ਤੋਂ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਲੈ ਕੇ ਆਪਣਾ ਵਜੂਦ ਦੁਨੀਆਂ ਨੂੰ ਦਿਖਾਉਣ ਲਈ ਮੈਦਾਨ ਵਿਚ ਨਿਤਰਿਆ ਹੈ। 30 ਜਨਵਰੀ 2010 ਨੂੰ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦੀ ਜਨਮ ਭੂਮੀ ਕਾਂਸ਼ੀ ਬਨਾਰਸ ਤੋਂ ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਜੀ ਤੇ ਹੋਰ ਸੰਤ ਮਹਾਂਪੁਰਸ਼ਾਂ ਦੀ ਅਗਵਾਈ ਵਿਚ ਕਰੋੜਾਂ ਦੇ ਜਨ-ਸਮੂਹ ਸੰਗਤਾਂ ਦੇ ਇਕੱਠ ਵਿਚ ਮਾਣ-ਸਨਮਾਨ ਦੀ ਰਾਹ ਤੇ ਚਲਦਿਆਂ "ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਧਰਮ" ਐਲਾਨ ਕਰ ਦਿੱਤਾ। ਜ਼ਬਰ ਜ਼ੁਲਮ,ਕੱਟੜਤਾ ਸ਼ੈਤਾਨੀ ਤਾਕਤਾਂ ਵਿਰੁੱਧ ਸਮੁੱਚੀ ਦੁਨੀਆਂ ਨੂੰ ਅਮਨ ਦਾ ਪੈਗਾਮ ਦੇਣ ਨੂੰ ਮੈਦਾਨ ਵਿਚ ਉਤਰੀ ਸੋਚ ਦਾ ਨਾਮ ਹੈ "ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਧਰਮ"। ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦੇ ਸਮੁੱਚੇ ਵਿਸ਼ਵ ਵਿਚ ਫੈਲੇ ਪੈਰੋਕਾਰਾਂ ਨੇ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ "ਬੇਗਮਪੁਰਾ ਸਹਿਰ ਕੋ ਨਾਉ" ਪੂਰੇ ਵਿਸ਼ਵ ਵਿਚ ਫੈਲਾਉਣ ਲਈ, ਜਨ ਜਾਗ੍ਰਿਤੀ ਲਈ, ਸਤਿਗੁਰਾਂ ਦੇ ਮਿਸ਼ਨ ਨੂੰ ਘਰ- ਘਰ ਪਹੁੰਚਾਉਣ ਲਈ ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਧਰਮ ਦਾ ਝੰਡਾ ਗੱਡਿਆ ਹੈ। ਸਾਰੇ ਵਿਸ਼ਵ ਵਿਚ ਸੁਖਮਈ ਤੇ ਸ਼ਾਂਤੀ ਦਾ ਹੋਕਾ ਦਿੰਦਾ ਰਵਿਦਾਸੀਆਂ ਧਰਮ ਸਾਰੀ ਮਾਨਵਤਾ ਨੂੰ ਅਮਨ ਦਾ ਪਾਠ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦੀ ਛਤਰ-ਛਾਇਆ ਵਿਚ ਰਹਿ ਕੇ ਪੜ੍ਹਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਨੇ ਜੀਵਨ ਭਰ ਸੰਘਰਸ਼ ਭਰੇ ਰਾਹਾਂ ਤੋਂ ਗੁਜ਼ਰਦਿਆਂ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਮਾਣ, ਸਨਮਾਨ, ਇੱਜਤ, ਮਾਨਵੀ ਹੱਕ, ਹਰ ਸੁੱਖ ਸਹੂਲਤ ਮੁਹੱਈਆ ਕਰਵਾਈ। ਜੋ ਸਮਾਜ ਅੱਜ ਸੁੱਖ ਸਹੂਲਤਾਂ ਭਰਿਆਂ ਜੀਵਨ ਬਤੀਤ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹੈ ਇਹ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦੀ ਬਦੌਲਤ ਹੈ। ਅੱਜ ਇਹ ਸ਼ਬਦ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਸੋਚਾਂ ਵਿਚ ਬਿਠਾ ਲੈਣੇ ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ ਕਿ ਜੇਕਰ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦੁਨੀਆਂ ਵਿਚ ਨਾ ਆਉਂਦੇ ਤੇ ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਨਾ ਉਚਾਰਦੇ ਤਾਂ ਇਹ ਸਮਾਜ ਲੱਭਿਆ ਨਹੀਂ ਲੱਭਣਾ ਸੀ। ਅੱਜ ਸਮੁੱਚੇ ਵਿਸ਼ਵ ਵਿਚ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦੇ ਪੈਰੋਕਾਰ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦੇ ਮਿਸ਼ਨ ਦਾ ਪ੍ਰਚਾਰ ਕਰਕੇ ਸੇਵਾਵਾਂ ਨਿਭਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਅੱਜ ਸਮੁੱਚੇ ਪੈਰੋਕਾਰਾਂ ਦਾ ਫਰਜ ਬਣਦਾ ਹੈ ਕਿ ਆਪਣੇ ਇਸ਼ਟ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦੀ ਮਾਨਵਵਾਦੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਦਾ ਪ੍ਰਚਾਰ ਕਰਨ ਹਿੱਤ ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਧਰਮ ਦਾ ਵੱਧ ਤੋਂ ਵੱਧ ਪ੍ਰਚਾਰ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ। ਜੋ ਐਲਾਨ ਹੋਇਆ ਹੈ ਸਾਡਾ ਰਹਿਬਰ – ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ, ਸਾਡਾ ਕੌਮੀ ਨਿਸ਼ਾਨ – 'ਹਰਿ', ਸਾਡਾ ਸੰਬੋਧਨ – ਜੈ ਗੁਰਦੇਵ, ਸਾਡਾ ਤੀਰਥ ਅਸਥਾਨ – ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜਨਮ ਅਸਥਾਨ ਮੰਦਿਰ ਸੀਰ ਗੋਵਰਧਨਪੁਰ ਵਾਰਾਨਸੀ (ਯੂ.ਪੀ), ਸਾਡਾ ਉਦੇਸ਼ – ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੀ ਮਾਨਵਵਾਦੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਮਹਾਰਿਸ਼ੀ ਭਗਵਾਨ ਬਾਲਮੀਕ ਜੀ, ਸਤਿਗੁਰੂ ਨਾਮਦੇਵ ਜੀ, ਸਤਿਗੁਰੂ ਕਬੀਰ ਜੀ, ਸਤਿਗੁਰੂ ਸਧਨਾ ਜੀ, ਸਤਿਗੁਰੂ ਸੈਨ ਜੀ ਦੀ ਮਾਨਵਵਾਦੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਦਾ ਪ੍ਰਚਾਰ ਕਰਨਾ। ਸਾਰੇ ਧਰਮਾਂ ਦਾ ਸਤਿਕਾਰ ਕਰਨਾ, ਮਾਨਵਤਾ ਨਾਲ ਪਿਆਰ ਕਰਨਾ ਤੇ ਸਦਾਚਾਰੀ ਜੀਵਨ ਬਤੀਤ ਕਰਨਾ। ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਨੂੰ ਪ੍ਰਚਾਰਦਿਆਂ ਡੇਰਾ ਸੱਚਖੰਡ ਬੱਲਾਂ ਦੇ ਮਹਾਨ ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਨ ਦਾਸ ਜੀ ਤੇ ਸੰਤ ਰਾਮਾ ਨੰਦ ਜੀ ਵਿਆਨਾ (ਆਸਟਰੀਆ) ਦੇ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮੰਦਿਰ ਵਿਚ ਗਏ ਤੇ ਉਥੇ ਉਹਨਾਂ ਤੇ ਹਮਲਾ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਜਿਸ ਵਿਚ ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਜੀ ਜ਼ਖਮੀ ਹੋ ਗਏ ਤੇ ਸੰਤ ਰਾਮਾ ਨੰਦ ਜੀ ਸ਼ਹੀਦ ਹੋ ਗਏ। ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦੀ ਵਿਚਾਰਾਧਾਰ ਤੇ ਹਮਲਾ ਹੋਇਆ ਇਸ ਹਮਲੇ ਦਾ ਜਵਾਬ ਦੇਣ ਹਿੱਤ ਸੰਤ ਰਾਮਾ ਨੰਦ ਜੀ ਦੀ ਸ਼ਹਾਦਤ ਨੂੰ ਨਤਮਸਤਕ ਹੁੰਦਿਆਂ 30 ਜਨਵਰੀ 2010 ਨੂੰ 'ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਧਰਮ' ਦਾ ਐਲਾਨ ਕਰਕੇ ਸੰਗਤ ਨੂੰ ਆਪਣਾ ਘਰ, ਆਪਣੀ ਵਿਰਾਸਤ ਦਿੱਤੀ। ਅੱਜ ਸਮੁੱਚੀ ਕੌਮ ਦਾ ਫਰਜ਼ ਬਣਦਾ ਹੈ ਆਪਣੇ ਬਾਪ ਦੀ ਵਿਰਾਸਤ ਨੂੰ ਸਾਂਭਣ ਦਾ, ਅੱਜ ਅਸੀਂ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਨੂੰ ਵਿਸ਼ਵ ਵਿਚ ਮਹਾਨ ਬੇਗਮਪੁਰਾ ਸ਼ਹਿਰ ਦੀ ਸੋਚ ਦੇਣੀ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਾਂ ਤਾਂ ਸਪੱਸ਼ਟ ਸੋਚ ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਧਰਮ ਐਲਾਨ ਕਰਨਾ ਹੋਵੇਗਾ। ਆਪਣੇ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਤੇ ਅਮਲ ਕਰਕੇ ਆਪਣੇ ਧਰਮ ਦਾ ਹਰਿ ਦਾ ਨਿਸ਼ਾਨ ਸਾਹਿਬ ਝੁਲਾਉਣਾ ਹੈ। "ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ" ਧਾਰਮਿਕ ਪੁਸਤਕ ਦਾ ਜਾਪ ਕਰਨਾ ਤੇ ਸਮੁੱਚੀ ਸੰਗਤ ਨੂੰ ਕਰਾਉਣਾ।

ਜਗਤਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦੇ ਸਮਾਜ ਨੇ ਭਾਰਤ ਦੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਪ੍ਰਾਂਤਾਂ ਵਿੱਚ ਅੰਦੋਲਨ ਚਲਾਏ ਜੋ ਅਲੱਗ-ਅਲੱਗ ਨਾਂਵਾਂ ਨਾਲ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਹਨ। ਉੱਤਰ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਵਿੱਚ ਜਾਟਵ ਅੰਦੋਲਨ, ਮੱਧ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਵਿੱਚ ਅਹਿਰਵਾਰ ਅੰਦੋਲਨ, ਛੱਤੀਸਗੜ੍ਹ ਵਿੱਚ ਸਤਨਾਮ ਅੰਦੋਲਨ, ਆਂਧਰਾ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਅਤੇ ਕਰਨਾਟਕਾ ਵਿੱਚ ਮਾਦੀਗਾ ਅੰਦੋਲਨ ਅਤੇ ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਆਦਿ ਧਰਮ ਅੰਦੋਲਨ ਚਲਾਏ ਗਏ। ਭਾਰਤ ਦੇ ਹੋਰ ਭਾਗਾਂ ਵਿੱਚ ਵੀ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਨਾਂਵਾਂ ਤੇ ਅੰਦੋਲਨ ਚਲਾਏ ਗਏ। ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਧਰਮ ਬਣਨ ਨਾਲ ਸਾਰੇ ਅੰਦੋਲਨਾਂ ਦੀ ਮਿਹਨਤ ਸਾਰਥਕ ਹੋ ਗਈ।

ਜੈ ਗੁਰੂਦੇਵ ਧੰਨ ਗੁਰੂਦੇਵ

—ਰਾਜੇਸ਼ ਕੈਂਥ

ਭਬਿਆਣਵੀ

(ਬਰਸੀ 'ਤੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼)

ਧੰਨ-ਧੰਨ
ਬਾਬਾ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ

ਜ਼ਿਲਾ ਹੈ ਬਠਿੰਡਾ ਪਿੰਡ ਗਿੱਲ ਪੱਤੀ ਬਾਬਾ ਜੀ ਦਾ,
ਬਾਬਾ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਜਦੋਂ ਇਸ ਪਾਸੇ ਆਏ ਸੀ।
ਉਨ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਬੇਟਾ ਉਹਦਾ ਨਾਮ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਜੀ ਸੀ,
ਉਂਗਲੀ ਫੜਾ ਕੇ ਉਹਨੂੰ ਨਾਲ ਪ੍ਰਭੂ ਲਿਆਏ ਸੀ।
ਜ਼ਿਲਾ ਹੈ ਜਲੰਧਰ ਨਾਮ ਪਿੰਡ ਹੈ ਸਰਮਸਤਪੁਰ,
ਸਾਰਿਆਂ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਡੇਰੇ ਉਸ ਪਿੰਡ ਲਾਏ ਸੀ।
ਨਾਲ ਦਾ ਹੈ ਬੱਲਾਂ ਪਿੰਡ, ਲੋਕ ਇਕੱਠੇ ਹੋ ਕੇ ਆ ਗਏ,
ਬੜੇ ਹੀ ਪ੍ਰੇਮ ਨਾਲ ਸੀਸ ਵੀ ਨਿਵਾਏ ਸੀ।
ਹੱਥ ਜੋੜ ਸਾਰੇ ਵੱਡੇ ਬਾਬਾ ਜੀ ਨੂੰ ਕਹਿਣ ਲੱਗੇ,
ਬੇਨਤੀ ਹੈ ਸਾਡੀ, ਸਾਡੀ ਗੱਲ ਨੂੰ ਨਾ ਮੋੜਿਓ।
ਆਸਾਂ ਤੇ ਉਮੀਦਾਂ ਅਸੀਂ ਸਾਰੇ ਲੈ ਕੇ ਆਏ ਬਾਬਾ ਜੀ,
ਦੇਖੋ ਮਹਾਰਾਜ ਸਾਡੇ ਦਿਲ ਨੂੰ ਨਾ ਤੋੜਿਓ।
ਪਿਆਰ ਜਦੋਂ ਦੇਖਿਆ ਸੀ ਸੰਗਤ ਦਾ ਅਥਾਹ ਉਨ੍ਹਾਂ,
ਉੱਠਕੇ ਤੇ ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਗਲ ਨਾਲ ਲਾ ਲਿਆ।
ਇੱਦਾਂ ਲੱਗਾ ਜਿੱਦਾਂ ਕੋਈ ਮਣਕਾ ਪ੍ਰੇਮ ਵਾਲਾ,
ਚੁਕਕੇ ਤੇ ਸੰਗਤਾਂ ਨੇ ਗਲ ਵਿਚ ਪਾ ਲਿਆ।
ਬੜੀ ਸੋਚ ਸਮਝਕੇ ਸਲਾਹ ਕੀਤੀ ਪਿੰਡ ਨਾਲ,
ਬੜੇ ਹੀ ਪਿਆਰ ਨਾਲ ਗੱਲ ਉਨ੍ਹਾਂ ਮੰਨ ਲਈ।
ਪਿੰਡ ਸਰਮਸਤਪੁਰ ਨੂੰ ਦੇ ਕੇ ਅਸ਼ੀਰਵਾਦ,
ਬੱਲਾਂ ਪਿੰਡ ਵਿਚ ਆ ਕੇ ਛੰਨ ਜਹੀ ਬੰਨ੍ਹ ਲਈ।
ਦਿਨੋਂ ਦਿਨ ਲੋਕੀਂ ਉਥੇ ਦਰਸ਼ਨਾਂ ਨੂੰ ਆਉਣ ਲੱਗੇ,
ਕੋਈ ਆ ਕੇ ਦੁੱਧ ਮੰਗੇ ਪੁੱਤਾਂ ਦੀ ਦਾਤ ਨੂੰ।
ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਵੀ ਬਾਬਾ ਜੀ ਨੇ ਖਾਲੀ ਨਹੀਂ ਮੋੜਿਆ ਸੀ,
ਸਾਰੇ ਪਏ ਤੱਕਦੇ ਸੀ ਨਵੀਂ ਪ੍ਰਭਾਤ ਨੂੰ।
ਸੰਤ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਜੀ ਨੂੰ ਵਿੱਦਿਆ ਪੜ੍ਹਾਈ ਆਪ,
ਕਹਿੰਦੇ ਬੇਟਾ ਤੂੰ ਤਾਂ ਮੇਰਾ ਨਾਂ ਚਮਕਾਉਣਾ ਹੈ।
ਲੱਖਾਂ ਹੀ ਪਰੇਮੀਆਂ ਨੂੰ ਨਾਮ-ਦਾਨ ਦੇਣਾ ਤੁਸੀਂ,
ਸੁੱਤੀ ਮੇਰੀ ਕੌਮ ਇਹਨੂੰ ਆਪ ਨੇ ਜਗਾਉਣਾ ਹੈ।
ਸਾਰੀ ਸਾਧ-ਸੰਗਤ ਨੂੰ ਬੁਲਾ ਕੇ ਪਾਸ ਬਾਬਾ ਜੀ ਨੇ,
ਕਹਿੰਦੇ ਮੇਰੇ ਬੱਚਿਓ ਨਹੀਂ ਭੁੱਲਣਾ ਉਂਕਾਰ ਨੂੰ।
ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਉਂਗਲੀ ਫੜਾ ਕੇ ਸੱਚੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਦੀ,
ਆਪ ਜੀ ਉਡਾਰੀ ਮਾਰ ਗਏ ਸੰਸਾਰ ਤੋਂ।
ਬਾਬਾ ਜੀ ਤੋਂ ਪਿੱਛੋਂ ਤੁਸੀਂ ਸਾਰੇ ਲੋਕ ਜਾਣਦੇ ਹੋ,
ਸੰਤਾਂ ਨੇ ਜੱਗ ਉੱਤੇ ਕੀਤੀ ਰੁਸ਼ਨਾਈ ਸੀ।
ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ,
ਦੇਸ਼ ਤੇ ਵਿਦੇਸ਼, ਘਰ-ਘਰ 'ਚ ਪੁਚਾਈ ਸੀ।
ਵਿਦਿਆ ਪੜ੍ਹਾਓ ਉਨ੍ਹਾਂ ਕਿਹਾ ਸਾਰੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ,
ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦੇ ਨਾਮ ਨੂੰ ਧਿਆ ਲਿਉ।
ਮੰਦਰ ਬਣੇਗਾ ਕਾਂਸ਼ੀ ਉੱਥੇ ਵੀ ਜ਼ਰੂਰ ਜਾਇਓ,
ਨਸ਼ਿਆਂ ਤੋਂ ਦੂਰ ਰਹੋ ਗੱਲ ਪੱਲੇ ਪਾ ਲਿਉ।
ਵਹਿਮਾਂ ਤੇ ਭਰਮਾਂ ਨੂੰ ਲਾਗੇ ਨਹੀਂ ਆਉਣ ਦੇਣਾ,
ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜੀ ਦਾ ਪੱਲਾ ਨਹੀਂ ਛੱਡਣਾ।
ਇਕ ਦਿਨ ਕਾਮਯਾਬ ਹੋਵੋਗੇ ਜ਼ਰੂਰ ਤੁਸੀਂ,
ਝੰਡਾ ਏਕਤਾ ਦਾ ਮੇਰੇ ਬੱਚਿਓ ਹੈ ਗੱਡਣਾ।
ਸੰਤ ਹਰੀ ਦਾਸ ਤੇ ਬੁਲਾ ਕੇ ਸਾਰੇ ਸੰਤਾਂ ਨੂੰ,
ਮੇਰੇ ਪਿੱਛੋਂ ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਗਲ ਨਾਲ ਲਾ ਲਿਉ।
ਨਾਮ-ਦਾਨ ਦੇਣਾ ਨਾਲੇ ਲੰਗਰ ਚਲਾਉਣਾ ਤੁਸੀਂ,
ਭਟਕੇ ਪ੍ਰਾਣੀਆਂ ਨੂੰ ਸਿੱਧੇ ਰਾਹੇ ਪਾ ਦਿਉ।
ਇੰਨੀ ਗੱਲ ਕਰਕੇ ਸਮਾਧੀ ਲਾ ਲਈ ਉਸੀ ਵੇਲੇ,
ਸੰਗਤਾਂ ਨੂੰ ਕਿਹਾ ਸਾਰੇ ਸਤਿਨਾਮ ਬੋਲਿਓ।
ਧੀਰਜ, ਸ਼ਾਂਤੀ ਤੇ ਹੌਸਲੇ ਨੂੰ ਛੱਡਣਾ ਨਹੀਂ,
ਸੌ ਦੁੱਖ ਆਵੇ 'ਪਾਲ' ਕਦੇ ਵੀ ਨਾ ਡੋਲਿਓ।

—ਕੌਮੀ ਕਵੀ ਸੀ.ਡੀ. ਪਾਲ, ਜੰਡੂਸਿੰਘਾ

ਸਪਤਾਹਿਕ ਬੇਗਮਪੁਰਾ ਸ਼ਹਿਰ,
ਆਪ ਪੜ੍ਹੋ ਅਤੇ
ਦੂਸਰਿਆਂ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹਨ ਲਈ ਪ੍ਰੇਰੋ।

ਮਹਾਨ ਸਮਾਜ ਸੁਧਾਰਕ, ਭਗਤੀ ਦੇ ਪੁੰਜ, ਰੂਹਾਨੀਅਤ ਦੇ ਮਸੀਹਾ

ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਬਾਬਾ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ

ਬਰਸੀ ਸਮਾਗਮ 'ਤੇ

ਸ਼ਰਧਾ ਅਤੇ ਸਤਿਕਾਰ ਭਰੀ ਸ਼ਰਧਾਂਜਲੀ ਭੇਟ ਕਰਦੇ ਹਾਂ

ਵਲੋਂ—ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਜਨਮ ਸਥਾਨ ਪਬਲਿਕ ਚੈਰੀਟੇਬਲ ਟਰੱਸਟ (ਰਜਿ.)

ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਜੀ ਚੇਅਰਮੈਨ, ਸੰਤ ਸੁਰਿੰਦਰ ਦਾਸ ਜੀ ਬਾਵਾ (ਵਾਈਸ ਚੇਅਰਮੈਨ), ਸ਼੍ਰੀ ਐਸ.ਆਰ. ਹੀਰ (ਜਨਰਲ ਸੈਕਟਰੀ), ਸ਼੍ਰੀ ਹੁਕਮ ਚੰਦ ਜੱਜ ਸਾਹਿਬ, ਸ਼੍ਰੀ ਦੇਵ ਰਾਜ, ਸ਼੍ਰੀ ਡੀ.ਸੀ. ਭਾਟੀਆ, ਸ਼੍ਰੀ ਤਰਸੇਮ ਲਾਲ ਸਰੋਆ, ਪ੍ਰਿੰ. ਸ਼੍ਰੀ ਜੋਗੀ ਰਾਮ, ਸ਼੍ਰੀ ਚਮਨ ਸਿੰਘ ਭਟੋਆ, ਸ਼੍ਰੀ ਪਰਸ਼ੋਤਮ ਦਾਦਰਾ।

ਯੁੱਗ-ਪੁਰਸ਼, ਇਨਕਲਾਬੀ ਆਗੂ, ਦਲਿਤਾਂ ਦੇ ਰਹਿਬਰ, ਰੂਹਾਨੀਅਤ ਦੇ ਪੁੰਜ

ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਬਾਬਾ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ

ਬਰਸੀ ਸਮਾਗਮ 'ਤੇ ਸ਼ਰਧਾ ਦੇ ਫੁੱਲ ਭੇਟ ਕਰਦੇ ਹਾਂ

ਵਲੋਂ—ਅਖਿਲ ਭਾਰਤੀਆ ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਧਰਮ ਸੰਗਠਨ (ਰਜਿ.) ਭਾਰਤ

ਮਹਾਨ ਸਮਾਜ ਸੁਧਾਰਕ, ਭਗਤੀ ਦੇ ਪੁੰਜ, ਰੂਹਾਨੀਅਤ ਦੇ ਮਸੀਹਾ

ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਬਾਬਾ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ

ਬਰਸੀ ਸਮਾਗਮ 'ਤੇ ਸ਼ਰਧਾ ਦੇ ਫੁੱਲ ਭੇਟ ਕਰਦੇ ਹਾਂ

ਵਲੋਂ—ਸੰਤ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਚੈਰੀਟੇਬਲ ਹਸਪਤਾਲ ਟਰਸਟ (ਰਜਿ.)

ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਜੀ ਚੇਅਰਮੈਨ, ਸੰਤ ਸੁਰਿੰਦਰ ਦਾਸ ਜੀ ਬਾਵਾ, ਸ਼੍ਰੀ ਐਸ.ਆਰ. ਹੀਰ (ਸੈਕਟਰੀ), ਸ਼੍ਰੀ ਕਿਰਪਾਲ ਚੰਦ (ਖਜ਼ਾਨਚੀ), ਸ਼੍ਰੀ ਚਮਨ ਲਾਲ, ਸ਼੍ਰੀ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਦਾਸ ਮਹੇ ਅਤੇ ਸ਼੍ਰੀ ਜੈ ਰਾਮ।

ਭਗਤੀ ਦੇ ਪੁੰਜ, ਰੂਹਾਨੀਅਤ ਦੇ ਮਸੀਹਾ,
ਮਹਾਨ ਸਮਾਜ ਸੁਧਾਰਕ

ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਬਾਬਾ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ

ਬਰਸੀ ਸਮਾਗਮ 'ਤੇ ਸ਼ਰਧਾ ਦੇ ਫੁੱਲ ਭੇਟ ਕਰਦੇ ਹਾਂ

ਵਲੋਂ—
ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਮਾਡਲ ਸਕੂਲ ਟਰੱਸਟ,
ਹਦੀਆਬਾਦ (ਫਗਵਾੜਾ)

ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਜੀ ਚੇਅਰਮੈਨ ਸੰਤ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਚੈਰੀਟੇਬਲ ਹਸਪਤਾਲ ਅੱਡਾ ਕਠਾਰ ਅਤੇ ਟਰੱਸਟੀਜ਼, ਸਕੂਲ ਮੈਨੇਜਮੈਂਟ ਕਮੇਟੀ ਦੇ ਮੈਂਬਰਾਨ।

ਸੰਤ ਸਮਾਜ ਦੇ ਸਿਰਮੌਰ

ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਬਾਬਾ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ

ਬਰਸੀ ਸਮਾਗਮ 'ਤੇ

ਸ਼ਰਧਾ ਦੇ ਫੁੱਲ ਭੇਟ ਕਰਦੇ ਹਾਂ

ਵਲੋਂ—
ਸੰਤ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਵੈਲਫੇਅਰ ਸੁਸਾਇਟੀ,
ਯੂਰਪ

ਨਾਮ ਦੇ ਰਸੀਏ, ਮਹਾਨ ਸਮਾਜ ਸੁਧਾਰਕ

ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਬਾਬਾ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ

ਬਰਸੀ ਸਮਾਗਮ 'ਤੇ ਸ਼ਰਧਾ ਦੇ ਫੁੱਲ ਭੇਟ ਕਰਦੇ ਹਾਂ

ਵਲੋਂ—ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਚੈਰੀਟੇਬਲ ਟਰਸਟ (ਯੂ.ਕੇ.)

ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਜੀ ਚੇਅਰਮੈਨ, ਟਰੱਸਟੀਜ਼ ਸ਼੍ਰੀ ਪਿਆਰੇ ਲਾਲ ਬੱਧਣ (ਕਨਵੀਨਰ), ਸ਼੍ਰੀ ਸਵਰਨ ਦਾਸ ਬੰਗੜ, ਸ਼੍ਰੀ ਨਿਰਮਲ ਦਾਸ ਚੰਦੜ, ਸ਼੍ਰੀ ਹਰਬੰਸ ਲਾਲ ਸ਼ੌਂਕੀ, ਸ਼੍ਰੀ ਅਜੀਤ ਕੁਮਾਰ ਕੰਵਲ, ਸ਼੍ਰੀ ਮਹਿੰਦਰ ਰਾਮ ਮਹਿਮੀ, ਸ਼੍ਰੀ ਪਿਆਰੇ ਲਾਲ ਬੈਂਸ, ਸ਼੍ਰੀ ਲਛਮਣ ਸਿੰਘ ਕਲੇਰ, ਸ਼੍ਰੀ ਕੈਲਾਸ਼ ਚੰਦਰ ਕਲੇਰ, ਸ਼੍ਰੀ ਅਮੀਂ ਚੰਦ ਵਿਰਦੀ, ਸ਼੍ਰੀ ਤਰਸੇਮ ਲਾਲ ਚੌਹਾਨ।

ਮਹਾਨ ਸਮਾਜ ਸੁਧਾਰਕ, ਭਗਤੀ ਦੇ ਪੁੰਜ, ਰੂਹਾਨੀਅਤ ਦੇ ਮਸੀਹਾ

ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਬਾਬਾ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ

ਬਰਸੀ ਸਮਾਗਮ 'ਤੇ ਸ਼ਰਧਾ ਦੇ ਫੁੱਲ ਭੇਟ ਕਰਦੇ ਹਾਂ

ਵਲੋਂ—ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਚੈਰੀਟੇਬਲ ਟਰੱਸਟ (ਵੈਨਕੂਵਰ), ਕੈਨੇਡਾ

ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਜੀ ਚੇਅਰਮੈਨ, ਟਰੱਸਟੀਜ਼ ਸ਼੍ਰੀ ਸੁਖਦੇਵ ਬੰਗੜ, ਸ੍ਰੀ ਵਰਿੰਦਰ ਕੁਮਾਰ ਬੰਗੜ, ਸ਼੍ਰੀ ਜੈਪਾਲ ਵਿਰਦੀ, ਸ੍ਰੀ ਕਰਮ ਚੰਦ ਵਿਰਦੀ, ਸ਼੍ਰੀ ਰਕੇਸ਼ ਵਿਰਦੀ, ਸ਼੍ਰੀ ਕਮਲੇਸ਼ ਚੰਦੜ, ਸ੍ਰੀ ਸੁੱਚਾ ਜੱਸੀ, ਸ੍ਰੀ ਮਦਨ ਝਿੰਮ, ਸ਼੍ਰੀ ਸੁੰਦਰ ਕੈਲੇ, ਸ੍ਰੀ ਗੋਪਾਲ ਲੋਹੀਆ, ਸ੍ਰੀ ਸਤਪਾਲ ਮਹੇ, ਸ੍ਰੀ ਰੂਪ ਲਾਲ ਫੀਰ ਅਤੇ ਸ੍ਰੀ ਸੰਤੋਖ ਸੁੰਢ।

ਭਗਤੀ ਦੇ ਪੁੰਜ, ਰੂਹਾਨੀਅਤ ਦੇ ਮਸੀਹਾ

ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਬਾਬਾ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ

ਬਰਸੀ ਸਮਾਗਮ 'ਤੇ ਸ਼ਰਧਾ ਦੇ ਫੁੱਲ ਭੇਟ ਕਰਦੇ ਹਾਂ

ਵਲੋਂ-ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਨੌਜਵਾਨ ਸਭਾ, ਸ਼ੋਸ਼ਲ ਵੈਲਫੇਅਰ
ਤੇ ਡਾ: ਬੀ.ਆਰ. ਅੰਬੇਡਕਰ ਮਿਸ਼ਨ ਸੁਸਾਇਟੀ (ਗਰੀਸ)

ਸੰਤ ਸਮਾਜ ਦੇ ਸਿਰਮੌਰ

ਬ੍ਰਹਮਲੀਨ ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਬਾਬਾ ਪਿੱਪਲ ਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ
ਦੇ ਬਰਸੀ ਸਮਾਗਮ 'ਤੇ
ਸ਼ਰਧਾ ਦੇ ਫੁਲ ਭੇਟ ਕਰਦੇ ਹਾਂ

ਵਲੋਂ-ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਸਰਵਣ ਦਾਸ ਚੈਰੀਟੇਬਲ ਟਰੱਸਟ
(ਯੂ.ਐਸ.ਏ.)

श्री 108 संत निरंजन दास जी महाराज और संत सुरिन्दर दास बावा जी की तरफ से रविदासिया धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए इंग्लैण्ड की यात्रा

ਅੰਮ੍ਰਿਤਬਾਣੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਵਿਦਾਸ ਮਹਾਰਾਜ ਜੀ ਦੇ ਦਰਸ਼ਨ-ਦੀਦਾਰੇ।

ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਅਤੇ ਸੰਤ ਸੁਰਿੰਦਰ ਦਾਸ ਬਾਵਾ ਜੀ ਵਲੋਂ ਰਵਿਦਾਸੀਆ ਧਰਮ ਦੇ ਪ੍ਰਚਾਰ ਅਤੇ ਪ੍ਰਸਾਰ ਹਿੱਤ ਇੰਗਲੈਂਡ ਦੀ ਯਾਤਰਾ ਦੌਰਾਨ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਸਮਾਗਮਾਂ ਵਿਚ ਵੱਡੀ ਗਿਣਤੀ 'ਚ ਸੰਗਤਾਂ ਨੇ ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਅਤੇ ਸੰਤ ਸੁਰਿੰਦਰ ਦਾਸ ਬਾਵਾ ਜੀ ਦੇ ਦਰਸ਼ਨ ਦੀਦਾਰੇ ਕੀਤੇ ਅਤੇ ਅਸ਼ੀਰਵਾਦ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤਾ।

ਹਾਈ ਕਮਿਸ਼ਨ ਆਫ਼ ਇੰਡੀਆ ਸ਼੍ਰੀ ਰਸਵੀ ਸਵੇਨ ਦਾ ਸਨਮਾਨ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਸ਼੍ਰੀ 108 ਸੰਤ ਨਿਰੰਜਣ ਦਾਸ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜ, ਸੰਤ ਸੁਰਿੰਦਰ ਦਾਸ ਬਾਵਾ ਜੀ, ਸ਼੍ਰੀ ਪਿਆਰੇ ਲਾਲ ਬੰਧਣ ਜੀ, ਸ਼੍ਰੀ ਬਲਬੀਰ ਕਲੇਰ ਜੀ, ਸ਼੍ਰੀ ਹਰਬੰਸ ਸ਼ੌਕੀ ਜੀ, ਸ਼੍ਰੀ ਨਿਰਮਲ ਚੰਦੜ, ਸ਼੍ਰੀ ਮਦਨ ਕਰਟੋਨੇ ਜੀ, ਸ਼੍ਰੀ ਮੋਹਨ ਕਰਟੋਨੇ ਜੀ ਤੇ ਸ਼੍ਰੀ ਲਛਮਣ ਦਾਸ ਜੀ।

ਸਰਬੱਤ ਦੇ ਭਲੇ ਦੀ ਅਰਦਾਸ ਕਰਦੀਆਂ ਸੰਗਤਾਂ।

ਇੰਗਲੈਂਡ ਵਿਖੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਸਮਾਗਮਾਂ ਦੌਰਾਨ ਵੱਡੀ ਗਿਣਤੀ ਵਿਚ ਸੰਗਤਾਂ ਪ੍ਰਵਚਨ ਸਰਵਣ ਕਰਦੀਆਂ ਹੋਈਆਂ।